भारतीय साहित रा निर्माता

गाडण केसोदास

लेखक

बद्रीदान गाडण

RJ
817.51
G 116 G

RJ
817.51
G 116 G

साहित्य अकादेमी

*

अस्तर माथै छप्योड़े मूर्तिकळा रै प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन रै दरबार रो बो दरसाव है जिण में तीन भविस्यवक्ता भगवान बुद्ध री मां, राणी माया, रै सुपनै री अरथावणी करै है । बारै हेटै बैठा है मुंसीजी जिका अरथावणी नै आखरां री भासा में आंकै है । भारत री लेखनकळा रो संभवतः औ सगळां सूं जूनो अभिलेख है ।

नागार्जुनकोण्डा : दूसरी सदी ई.

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य रो निर्माता

गाडण केसोदास

लेखक

बद्रीदान गाडण

साहित्य अकादेमी

Gadan Kesodas : A monograph in Rajasthani by Badridan Gadan on the Rajasthani author. Sahitya Akademi, New Delhi (1992), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी

पैली खेप : 1992

RJ
817.51
G 116 G

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ोरोज़साह मारग, नवी दिल्ली 110 001

पेढ़ी : 'स्वाति', मिंदर मारग, नवी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी तल, 23 ए/44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014

109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

मोल : पन्द्रह रिपिया

115860
11/11/2004

ISBN 81-7201-295-0

लैज़रसैटिंग : वैलविश पब्लिशर्स
पीतमपुरा, दिल्ली 110 034

Library IIAS, Shimla
RJ 817.51 G 116 G
00115860

मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स
नवी दिल्ली 110 051

"हेर सुजस-मग हालिया,
काटण काळ करूर ।
मंडिया रहसी भू मथै,
जांरा खोज जरूर ।।"

अनुक्रम

अध्याय 1

चारण जाति री ओळखाण 9

अध्याय 2

जीवन-परिचय 16

अध्याय 3

केसोदासजी री रचनावां 22

अध्याय 4

गाडण केसोदास री भारतीय वाङ्मय नै देण 60

परिशिष्टि-क 65

परिशिष्टि-ख 70

परिशिष्टि-ग 78

परिशिष्टि-घ 87

अध्याय 1

चारण जाति री ओळखाण

मध्ययुगरी राजस्थानी अर गुजराती री साहित, संस्कृति अर सभ्यतारी धार में चारण जात रो गौरव पूर्ण अतीत रियो है । जिण काळ में मुसळमान आक्रान्तावां भारत री भोम नै आपरी परचंड ताकत सूं पदाक्रान्त कीधी राजस्थान अर गुजरात रा क्षत्रियां आप रा प्राणां री आहुति देय स्वतन्त्रता अर स्वाभिमान खातर ठौड़ ठौड़ जूझिया अर भारतीयता रा गौरव री रुखाळी करी उण बिखम समै में देस-भगती, निरभीकता अर प्राणोत्सर्ग री अमर प्रेरणा देवणियां चारण कवि ही हा ज्यो आप री ओज भरी बाणी सूं क्षत्री सासकां, सामंतां अर बीजा लोकां में प्राण फूंकिया । चारण समान रूप सूं कलम अर तरवार रा धणी हा ज्यो कांधा सूं कांधो जोड़ क्षत्रियां रै साथ रणभोम में भी लड़ता अर मौको पड़ियां बीरां नै परबोध देय वांरा कर्तव्य रो बोध करावता । इणी चारण जात री गाडण साखा में महाकवि केसोदास जलमियां हा ।

आंथूणैं राजस्थान अर गुजरात में तो चारणां नै साधारण रूप सूं लोग जाणैं है पण देस रा बाकी भाग में लोग सरबथा अणसेंधा है । आम तौर पर लोग आपरै मानस में चारण जाति रो चितराम अेक चाटुकार अथवा प्रशस्ति गायक जाति रा रूप में राखै ज्यों वां रा अल्पग्यान रै कारण है । इण वास्तै इण जाति रै उद्गम अर परम्परा रो इतिहास सार रूप में इण ठौड़ बतावणों जरूरी लागै ।

चारण जाति अेक बहोत ही पुराणी जाति है; अठा ताणीं क, शास्त्रां अर पुराणां में "चारण" सबद् रो दाखळो थान थान पर मिळै । बाल्मीकि रामायण रा बालकांड, सर्ग 45 श्लोक 33 में

उल्लेख है, "इमं आश्रमं मुत्सृज्य सिद्ध चारण सेविते, हिमवत् शिखर रम्ये तपस्ते यें महातपाः" । बाल्मीकि रामायण रा सुन्दरकांड में (सुंदरकांड 58-161) लंका दहण रै पछै जद पवन पूत हणमान जी रा मन में ओ सांको ऊठियो कै कठैई सीता माता तो इण लाय रै मांय नीं बळग्या है? उणी बखत हणमान जी रै इण संताप रो निवारण करबा सारू चारणां आय सीता जी री खेम कुशळ रा समाचार दीन्हा । महाभारत में भी आदि पर्व में अेक ठौड़ बतायो गयो है कि हेमाचळ सूं हजारूं चारण पाण्डु-पुत्रां नै लेय 'र हतणापुर नगर में आविया तो उठै रा नागरिकां नै घणों इचरज वियो । महाभारत रा बन-पर्व में भी लिखी है क अरजण सिद्ध-चारण सेवित लोक रै मांय जाय नै इन्द्र सूं पांच बरसां ताणी आयुध बिद्या सीखवी । महाभारत जुध री सरूवात रै पैलां भगवान श्री कृष्ण रा आदेस मुजिब अरजण बिजै री कामना सूं देवी रो पूजन कीधो जिण में बिनै करी, "तुष्टिः पुष्टिः धृतिः दीप्तिः चन्द्रादित्य विवर्धिनी; भूतिर्भूति मितां संख्ये वीक्षसे सिद्ध चारणैः"। श्रीमद्भागवत में चारण जात नै आठ भांत रा देव-सर्ग में मानिया है । देव-सर्ग में गिणीजण वाळी आ जात देवतावां रै सागै विचरण करती हुती, दिव्य करमां रो जस गाण करती नै नीच करमां री निन्दा करती । इण जात रो मूळ रैवास गन्धमादन परबत पर मानीज तो । अै नाग लोक में भी विचरता अर हेमाचळ रै सिखरां माथै भी इणा रो बासो रहियो । रामायण काळ में बाल्मीक जी रिखी रै मत सूं आंरो निवास लंका में हुतो । आपरा विशेष गुण-करमां रै माफक अै च्यारूं बरणां सूं आपरी अळगी ओळखाण राखता । देवां-रॉ जगनां में सामल होवण रो आं रो जरूरी इधकार हुतो । "पद्म पुराण" में बर्णित अेक परसंग माफक महाराज पृथु अेक महा-जग्य रो अनुष्ठान कीधो जिण री पूर्णाहुति पर सब नै दक्षिणा देवती टेम चारणां नै दाक्षिणापथ रो तैलंग देस दीधो "चारणाय तत; प्राददात्तैलंगं देशमुत्तमम्"।

इण भांत आ बात समझण में आवै क राजा पृथु रा जुग में अर उण रै उपरांत चारण जात रो निवास दिखणाद में भी रियो । तैलंग देस सूं चारण कद उत्तर भारत में आविया इण रो

कोई पतो नीं चालै । महाभारत काळ में इण जात रा थरपियोड़ा 'यायावर' नामक आश्रम धरम रो उल्लेख मिळै अर अेक "यायावरीय उपनिषद" री रचणा रो भी जिकर आवै । इण जात रै मांय कैई गोत्र आर्ष होवण सूं इण जात रो संबंध ऋषियां सूं सीधो जुड़ी जै । 'आसिया', 'देवल', 'बार्हस्पत्य' आदि गोत्र आर्ष उद्गम कांनी परतख संकेत करै । काळान्तर सूं आ जात आखै उत्तर भारत में फैली अर जन-जीवन रो उद्बोधन करती जन-जागृति रो बिगुल बजाय 'र राष्ट्रोत्थान में योग देवण में ही जीवन री सारथकता समझी । कश्मीर प्रदेस में उण जुग में प्रचलित 'कौल" धरम रै उत्थान में भी इण जात रो काफी हाथ रियो । चारण जात रा कैई लोग जैन धरम नै भी आसंगियो अर आचरियो जिण सूं जैन धरम ग्रन्थां रै मांय आ जात गगण-चारी अर दिव्यरूप धारी गिणीजी ।"प्रबन्ध चिन्तामणि" रा रचनाकार मेरुतुंगाचार्य लिखियो है कै शुक्रावतार तीरथ में श्वेतांबर सम्प्रदाय में दीक्षित चारण कुळ में जलमियोड़ा आचार्य 'वज्रसेन' अेक नाभेय री थापणा कीधी, जिण रो घटणाकाळ विक्रम संवत् रै आरम्भ रो है । इण भांत जैन धरम में आचार्यत्व नै प्राप्त होतां थकां भी घणकरा चारण आपरा यायावर धरम रो निरबाह करता रिया । कन्नोज रा प्रतिहारां रो राजकवि 'राजशेखर' आप रो गोत 'यायावरीय' बतावियो है । ईसा री पहली आठ सदियां रै मांय इण जात रो इतिहास अंधकार पूर्ण है । ईसा री आठवीं सदी रै उपरांत तो क्रमिक रूप सूं इण जात रो इतिहास मिळै जद कै गुप्त काळ मैं सम्राट हर्षवर्धन रै जग्य में 'चारणां' नै नूंत र बुलावण रो जिकर हर्ष-चरित्र में आवै । गुप्त साम्राज्य रै विघटण पाछै न्यारा न्यारा गोत्रां रा राजपूत राजां रा थापण तथा वां रजवाड़ां में राज्याश्रित चारणां रो करीब करीब हरेक रजवाड़ा में होवणों परमाणीक तौर पर इतिहास रा पाना में मिळै । आठवीं सदी तांई इण जात रो रैवास सिंध में भी हो । इणी समै रै मांय सिंध रा चाळकना गांव में साउवा साखा रा चारण मादा रा बेटा मामड़ रै घरे आवड़ देबी (आई जी) रो जलम हुवो । आवड़ जी नै चारण समाज में हिंगळाज देबी (ज्यो बलोचिस्तान में है) रो ओतार

मानै । आवड़ जी री बीजी छव बहनां गुली, हुली, रेफळी, आछी (इंच्छा) छेछी (चर्चिका) अर लांगी नै भी सगत रा औतार मानता । अै सातूं ही बहनां अनोखी, रूड़ी रूपाळी अर दिव्य गुणां वाळी ही । सिंध रो सासक हम्मीर सूमरो मुसळमान हमलावरां सूं पराजित होय इस्लाम धरम आसंग लियो हो । वो आवड़ जी रा अनोपम रूप लावण्य पर मोहित होय बां सूं बियाव रचावण री तजबीज कीधी तद स्वाभिमानी मामड़ इण रो विरोध करियो जिण सूं खीजर सूमरो उण नै कैद कर लीन्हों । सम्मान री रिच्छा वास्तै अै सातूं ही बहना सिंध छोड'र जैसळमेर सूं 14 मील रै आंतरै 'तेमड़ै' आयगी पण उठै भी बिपदा आं रो लारो नीं छोडियां । सबसूं छोटी बहन लांगी (खोड़ियार) पर बलभी रो राजा शिलादित्य (सप्तम) मोहित होय परणबा ताणी आमादा वियो जिण सूं कुपित होय खोड़ियार उण रा कुळ रो नास कीधो । इण पछै आवड़ जी आपरी छहों बहनां री रक्षा रो परबन्ध कर पाछी सिन्ध में आई जठै सशस्त्र विद्रोह रो संगठण कर नै सूमरां रा राज रो बिधूंस कीधो । इण चमत्कार रै पछै आखै सिंध अर कठियावाड़ में आवड़ देबी पूजनीक मानीजबा लागी, अर जण जण री आस्ता री धिराणी हुवी । सिंध में रहतां थकां आवड़ देवी जन हित रो अेक मोटो काम ओ करियो कै सिंध नद री सहायक चन्दरभागा (जिण नै उठा रा लोग हाकड़ो भी कैवता) नदी रो परवाह बदलियो अर उण नै कच्छ रा रन में राळ दी, जिण सूं अेक बडा भूभाग नै सरबनास सूं बचावियो अर हर बरस बाढ सूं होवण बाळी बरबादी सूं सुरक्षा दिराई । इण कारज सूं आवड़ जी री लोक प्रियता आखै सिंध, राजस्थान अर गुजरात में फैली ।

सिंध सूं चारण जात रा लोग राजस्थान, गुजरात अर उत्तर भारत रा बीजा राजपूत राज्यां में फैलिया अर बसग्या । बिद्या व्यसनी, कवि अर जोधा होवण रै कारण चारणां नै राज्याश्रय नैं जागां मिळी अर राजपूत वर्ग बां नै सदा पूजनीक तथा श्रद्धा रा पात्र समझिया । हरेक राज में राजकवि अर पोळ-पात (प्रोलिपात्र) रा सम्मान सूं बिभूषित चारण जात रा आम लोगां ने भी बारहठ अथवा

द्वार-हठ रा रूप में सम्मान मिळियो । श्री रावत सारस्वत "दुरसा आढा" रा जीवन-परिचय में जकी व्युत्पत्ति 'बारठ' सबद री करी है, वा ठीक नीं । वां लिखी है क "द्वार पर विवाहादि अवसरों पर त्याग के लिए हठ" करने के प्रसंग में यह पदवी मिली ।" चारणां में आ कुप्रथा सोळवीं सदी में पनपी जद कै बीजी विरुद गायक जातियां री देखा देखी में अै लोग भी त्याग लेवणों सरू कीधो । पण सत्रवीं सदी में ही चारण समाज इण बुराई नै नकारणों सरू कीधो अर खुद दुरसा आढा इण प्रथा री बुराई नै समझ, समाज सुधार रो बीड़ो उठावियो । अन्त रै दाय चारण समाज इण प्रथा नै बिल्कुल छोड़ दी । 'बारहठ' अर 'पोळ-पात' सबदां रो प्रयोग वास्तव में चारणां नै नगर द्वार अर राजभवन रा द्वार माथै अत्यधिक विश्वास भाजनता रा प्रतीक रूप में प्रतिष्ठापित राखण रै कारण सूं है । इतिहास में इण बात रा अनेक उदाहरण है जठै नगर द्वार तथा राजभवन द्वार पर चारणां रक्षा खातर आपरा प्राणां री आहुती दीन्हीं । इतिहास साक्षी है क राजपूत राजघराणां री बिपदा रै समै चारण परिवारां में पाळणां हुई अर राजपूत-चारणां रा सनातन रा सैकड़ां प्रसंग बातां, ख्यातां अर गीतां मे, आज भी सुरक्षित है । "दुरसा आढा" शीर्षक पोथी में ही रावत जी "भट्टां, रावां, कवीसरां-कविरावां" रा समाज री चारणां सूं जिण व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा रो जिकर करियो है वो भी ठीक कोनी क्यूंक वास्तविक होड़ चारणां अर ब्राह्मणां में ही । बीजी बिरुद गायक जातियां सूं चारणां री कोई होड़ रो सवाल नीं हो । देव बाणी संस्कृत रा जनसाधारण में प्रचार प्रसार री समाप्ति पछै अपभ्रंश अर बीजी भाषावां रो प्रयोग सरू वियो अर चारणां आप रा काव्य री जुदी ओळखाण खातर डिंगळ भासा में 'गीत' बिधा रो आविष्कार करियो जिण पर सैकड़ां बरसां वां रो अेकाधिकार रियो । श्री सारस्वत नवीं सताब्दी में 'अनर्घ राघव' नाटक रा कर्ता मुरारि कवि रा जिण सुभाषित रो जिकर करियो है उणसूं ही आ बात सिद्ध हुवै क 'गीत' अर 'ख्यातां' रो उण समै भी अस्तित्व हो अर राज, समाज में गीतां, ख्यातां रो परभाव बत्तो हो जिण सूं चारणां रो मान अधकाई सूं

हो । संस्कृत रा पराभव सूं भयभीत ब्राह्मण कवि री आ दलील के बाल्मीक जैड़ा संस्कृत कवियां सूं ही 'राम' नै जस प्राप्त हुओ कठा तांणीं ठीक है, सोचण अर समझण री बात है । भगवान राम रो जस तो तुळसीदास जी री रांमायण सूं जितरो वियो उतरो संस्कृत पोथियां सूं नीं वियो । वियां पेशा री दीठ सूं देखां तो ब्राह्मण वर्ण रो भी मूळ व्यवसाय काव्य शास्त्रां रो पठन, पाठन तथा राज्याश्रय प्राप्त करणों भी रियो । याचक वृत्ति में भी ब्राह्मम चारणां सूं लारै नीं हा और नह ही विरद बखाण अर स्तुति गायन में । पण क्यूं कै अै लोग घण में हा अर आं रो हिन्दू समाज माथै सदामद सूं वर्चस्व रियो, आं बीजा हम पेशा वर्गां नै हींण भाव सूं देखिया अर उण माफक ही प्रचारित करिया ।

चारण जात रा च्यार परधान भाग-मारू, काछेला, सोरठिया अर तुंबेल आं रै निवास सारू जनपंदा रा नांवां मुजिव पड़िया लागैं । मध्य प्रदेस अर मरू प्रदेस रा निवासी "मारू" कच्छ रा निवासी "काछेला", सौराष्ट्र रा "सोरठिया" अर तैलंग रा अन्दाजन "तुंवेल" बाजिया । आंच्यार भागां री पछै 120 साखां हुयगी जिण मां सूं 'गाडण' साखा में इण पोथी रा चरित नायक कवि केसोदास रो जलम वियो ।

चारण मुख्य रूप सूं शक्ति रा उपासक है पण शाक्त संप्रदाय री विकृतियां अर संकीर्णतावां सूं साव अछूता है । कौल मत रा भैरवी चक्र अर पूजा नै कोई भी चारण कदैं नीं आसंगियो । भोतसा चारण नाथ सम्प्रदाय में भी दीक्षित हुया जिण मांय सूं बिख्यात चर्पट नाथ, अलूनाथ तथा गाडण केसोदास आद हैं । बीजा धरम, संप्रदायं नै अपणायतां थकां भी चारण आपरा मूळ धरम 'शक्ति उपासना' नै नी त्यागिजो । चारण लोग खुद नै "देबी पुत्र" मानै । इण जात रै मांय समै समै पर दैवी शक्ति सम्पन्न, उंचा आचार विचार, नैं चरित्रवाळी अनेक कन्यांवां जलम लीधो जो समाज में देवी रूप में पूजनीक मानी गई । इसी कन्यांवां में आवड़जी, कामेही जी, बिरवड़ी जी तथा करणी जी आद मुख्य हैं । श्री करणी जी रो थान बीकानेर रै खनै देसणोक में है जठै लाखों लोग दरसण करबा

आवै । आसोज अर चैत रा नोरतां में भारी मेळो भरै । चारण जात रा ऊंचा आचार बिचार अर चरित्रगत विशेषता री तारीफ में जोधपर नरेस मानसिंह जी रो ओ दूहो घणों परसिध है –

"बधता रजपूतां बिचै, चारण बातां च्यार ।
अकल, बिद्या, चित ऊजळा, अधका घर आचार ।।"

अध्याय 2

जीवन-परिचय

महाकवि केसोदास गाडण रो जलम चारणां री 'गाडण' साखामें दूदाजी रा बेटा सदमाल जी रै घरैं विक्रमी संवत् १६१० में मान्यो जावै । बीजा चारण कवियां री भांत केसोदास जी अथवा वांरा पिता सदमाल जी भी जीवनी संबंधी कोई सूचना किणी रचना में नीं छोडी जिण सूं मौखिक परम्परा सूं उपलब्ध सूचना रै आधार पर अन्दाजो लगावणों पड़ै । सदमाल जी जोधपुर नरेस सूरज सिंघ जी रा सम सामयिक हा । सूरज सिंघ जी सदमाल जी नै संवत् १६५३ विक्रमी में गांव 'छींडियो'[१] सासण में दीधो । सदमाल जी भी डिंगळ रा श्रेष्ठ कवि, विद्वान हा । इण बावत मारवाड् रा "परगना री विगत-भाग १ रै पृष्ठ संख्या ३४८ पर ओ उल्लेख मिळै, "छींडियो-राजा सूरज सिंघ जी रो दत्त, गाडण सांदु दूदावत लीधो । हिमैं माधोदास छै । जाट बसै । कोहर-१ मीठो । संवत् १७१५/३५, १६/२८0, १७/१३0, १८/३७५, १९/१४५ ।"

क्यूंकै 'छींडियो' सदमाल जी नै सं. १६५३ वि. में मिलियो इण वास्तै केसोदास जी रो जलम इण गांव में होवणों संभव कोनी । संवत् १६५३ में वां री उभर-४३ वरसां री ही । राजस्थानी साहित अर इतिहास रा विद्वान श्री सौभाग्य सिंह शेखावत रै माफक केसोदास

---

१. नकल तांबा पत्तर "छींडिया"

"सिंघ श्री महाराजाधिराज श्री सूरज सिंघ जी बचनातु चारण सदूद (सदमल) गाडण नूं मया करै गांव १ छींडियो उदकी तंबा रै पत्र लिखी दियो । षेत्र २ वीं चाराळिया मां है षेत्र २ वी. सोयला मा है छींडिया भेळा घाती देसी संवत् १६५३ बृषे वदि १२-श्रीमुख"

जी गांव "गाडणां री बासणी" रा रैवणियां हा (देखो 'वरदा' वर्ष-८ अंक ३ जुलाई १९६५ तथा 'शोध-पत्रिका' वर्ष १७ अंक ३ सन् १९६६ ई. । केसोदास जी रै सुरगवास रै बारै में भी मतभेद है । कुछ लोग मानै कै संवत् १६८७ में आं रो देहवासाण ८७ बरस री उमर में वियो । पण आ बात सही नहीं क्यूंकै नागोर रा राव अमरसिंघ राठौड़ तथा बलू जी चांपावत री वीरता बाबत केसोदास जी रा रचियोड़ा दूहा, गीत तथा कवित्त काफी मात्रा में मिळै (दिखावो परिशिष्टि 'ख') ज्यो वां राव अमर सिंघ द्वारा कटार सूं साहजंहा रा दरबार में फौज बख्शी सलावत खान नै मारणैं री वीरता पूर्ण घटणा पर कहिया हैं । आगरै रा किला में आ घटणा संवत् १७०१ विक्रमी री है जकी इतिहास सूं सिद्ध है । इण सूं आ बात साफ जाहिर है कै केसोदासजी संवत् १७०१ रै बाद तांणी जीवता हा । स्व. पद्म श्री सीताराम लाळस भी ओ तर्क "गज गुण रूपक-बन्ध" री भूमिका में दीन्हों है ।

केसोदासजी जोधपर नरेस गज सिंघ जी रा किरपा-पात्र हा अर वां रै सागै कई युद्धां में भी रिया जां रो विसद वर्णन "गज-गुण रूपक-बन्ध" नामक ग्रंथ में है । महाराजा गजसिंघ जी आपरा पिता श्री सूरज सिंघ जी रा सुरगवास रै पछै संवत् १६७६ विक्रमी में गादी माथै बैठा । संवत् १६८३ रा जेठ सुदी १३ नै केसोदासजी नै गांव सोबड़ावास (जिला पाली) लाख पसाव में गजसिंघ जी दीन्हों । इण सूं जाहिर है कै "गज गुण रूपक-बन्ध" री रचना संवत् १६७९ अर १६८३ रै बीच हुई । "मारवाड़ रा परगना री विगत"—भाग २ पृष्ठ संख्या ४८९ मुजिब "सोभड़ा वास कोस ८ था जीवणौं । दत्त माहाराजा गजसिंघ जी रौ । गाडण केसोदास सांदुवोत नूं । संवत् १६८३ रा जेठ सुदि १३ लाष पसाव मांहे दीयौ । हिमैं गाडण उदैकरण, भोजराज, भींव, केसोदास छै । जाट, वांणीयां, चारण, राजपूत वसै । धरती हळवा ५० धान सारै हुवै । ऊनाळी नहीं । सेंवज गेहूं, नै लूण रौ आगर १ हुवै । तळाव १ मास १० पाणी । पछै मांगै पी वै ।'

केसोदास जी री लिखाई-पढाई रै बारे में कोई जाणकारी नीं

मिळै । चारण समाज में फैलिया प्रवादां माफक केसोदास जी नै टाबरपणै में ही सिद्ध गोरखनाथ जी रा दरसण विया अर वांरी किरपा-आसीरवाद सूं वै छोटा थका ही भगवान री भगती में लागिया । इणी काळ में अै अेक जोगी रै सागै पंजाब गिया परा अर नाथ संप्रदाय में दीक्षित विया । उठै वै कतरा बरसां रिया इण रो कोई अन्दाजो कोनीं । पण बेगा ही वै मारवाड़ ओठा आयग्या अर ग्रहस्थ जीवण पाछो अंगेजियो । परसिध है क आंरा गरू आदेस दीधो कै केसोदास थूं गृहस्थ में ही रहतां भगती भाव सूं साधना कर तनैं इणी सूं सिद्धी मिळ सी । गुरू रै हुकम माफक वां ग्रहस्थाश्रम साधियो । अै सदा ही गेरुवां पोसाक राखता, अठा ताणी के वियाव रै मोकै भी आं वै हीज कपड़ा राखिया । आं रो वियाव कठै हुवो अर पली रो नांव कांई हो, इण बाबत कोई जाणकारी कोनी । गेरूवां पोसाक रै कारण अेकर आं नै आपरा स्वाभिमान माथै भी चोट खाणी पड़ी । परसिध है कै बूंदी नरेस हाडा राव रतन आं नै मिळबा बुलाविया । संजोग बस अै जद राव रतन हाडा सूं मिळबा बूंदी गिया तो आं रै सागै अेक दूजो चारण भी हो जो रूपाळा घणमोला कपड़ा धारण कियां हो अर केसोदास जी आपरा गेरुवां भेख में ही हा । जद अै राव रतन खनै पूगा तो राव उण दूजै आदमी नै ही केसोदास समझियो अर उणरी खातरी करण लागियो । केसोदास नै कोई साधारण साधू जाण 'र वांरी उपेक्षा कीधी । अै तुरत ही पूठा आयग्या अर बिसर रा दूहा लिखनै राव हाडा नै भिजवाय दिया :

"गीतां दूहां कवतड़ां, मूळ न राचै मन्न ।
कपड़ा नूर खुदाय दा, रीझे राव रतन्न ।।१।।
हींज की जाणै तीय रस, बाणक मांस बड़ांह ।
रतन की जाणै रूपगां, गौगी मारी डाह ।।२।।
कवतां सर गुण ले मिळै, तातें चमकै तन्न ।
अन्त बेर नंह बीसरै, हाडो राव रतन्न ।।३।।"

इण घटणा सूं आ लागै क राव रतन आपरी भूल नै सुधारण रो कोई प्रयास नीं करियो अर जिण व्यक्ति सूं मिलणूं चावतो उण नै नकार दूजा आदमी नै ही उणरा पैरावा कारण प्रमुखता दीन्ही

जिण सूं केसोदास जी रा स्वाभिमान माथै गैरो आघात लागियो अर बिसर रा दूहा कहणा पड़िया ।

गाडण केसोदास अर हरिरस रा प्रणेता बारहठ ईसरदास रोहड़िया समकालीन हा अर दोनुवां में मामा भुवां रा भाई रो संबंध बतायो जावै । ईसर दास जी री माताजी "अमर बा", गाडण साखा रा हमीर जी रणछोड़ दानजी री बेटी ही । इण भांत संबंध नेड़ै रो नीं तो दूर परै रो हो सकै । ईसर दास जी, गाडण केसोदास रै पिता सदमाल जी रा साईना हा । सदमाल जी री देह संवत् १६६८ में बरती आ बात छींडियाँ गांव में वां री स्मृति में बणाई छत्री रा शिला लेख सूं साबित हुवै (गज-गुण रूपक-बन्ध पृष्ठ १५) । ईसरादास जी उमर में केसो दास जी सूं कम सूं कम १५-२० बरसां बडा हा पण "नीसांणी विवेक-वार" री रचना रै पछै तांणी जीवता हा । क्यूंक नीसाणीं रै बाबत ईसरदास जी रो कहियो ओ दूहो भोत परसिध है :

"नीसाणंद नींसाण, केसो परमारथ कियो ।
पोह स्वारथ परमाण, साखां सौ बीसां सिरै ।।"

ईसरदास जी रा "हरी रस" रै बाबत केसोदास जी रो ओ दूहो भी लोक प्रचलित है :

"जग प्रजाळतोजाण, अघ दावानळ ऊपरा ।
रचियो रोहड़ राण, समंद हरी-रस सूरवत।।"

ई सूं आ बात साबित हुवै कै "नीसाणी विवेकवार" री रचना "गज गुण रूपक-बन्ध" सूं पैली की है तथा रूपक-बन्ध री रचना ईसरदास जी रै जीवतां नीं हुई नहीं तो इसा मैताऊ ग्रंथ रै बारै में भी वै अवस लिखता ।

"वेलि क्रिसन रुकमणी री" रा रचियता राठौड़ प्रिथीराजजी भी केसोदासजी रा समकालीन हा अर "बेलि" री बाबत ज्यों सन्देह पैदा कियो गयो के आ रचणा राठौड़ री नीं है उण रा निरणै वास्तै च्यार विद्वानां रो जको निरणायक-मंडळ बणायो गियो उण में गाडण केसोदास भी अेक हा । बीजा निरणायक हा, दुरसा आढा, माधोदास दधवाड़िया तथा माला सांदू । निरणायक मंडळ आपरा निरणै में

प्रमाणित करियो क "वेलि" री रचना राठौड़ प्रथीराजजी री खुद री है । राठौड़ प्रथीराजजी केसोदास जी री प्रशस्ति में ओ दूहो कयो है –

"केसो गोरखनाथ कवि, चेल्हो कियो चकार ।
सिध रूपी रहसी सबद, गाडण गुणां भंडार ।।"

इण सूं आ बात भी सिध हुवै कै केसोदासजी गोरख संप्रदाय री परम्परा में हा । "वेलि क्रिसन रुकमणी" री प्रसंसा में केसोदास जी रो कहियो ओ कवित्त (छप्पय) भी मिळै –

"बेद बीज जळ बिमळ, सकति जिण रोपी सद्धर ।
पत्र दुहा द्रुम गुहुप, वास लोभी लिखमी वर ।।
पसरी दीप प्रदीप, अधक गहरी आडंबर ।
जिकै सुद्ध मन जपै, तेउ फळ पांमै अम्मर ।।
विस्तार कीध जुग जुग विमळ, ध्रन्य क्रिसण कणहार धण ।
अम्रत बेलि पीथळ अचळ, तैं रोपी कल्याण तण ।।"

केसोदासजी री "नींसाणी विवेक-वार" री रचना रै बारे में चारण समाज में अेक प्रवाद बहोत ही प्रचलित है ज्यो इण भांत है :

"केसोदास जी आपरा गांव में (अंदाजन छींडिया में ही) अेक नुवों कुओ खुदवाय रिया हा जिण री गाळ रो काम चालू हो । अेक दिन सिंझ्या रा वै अेकला ही कोठी में देखण वास्तै उतरग्या । वै पींदा माथै पूगा ही हा क कोठी री झुरी ढसकी अर हजारों मण माटी ऊपर पड़गी अर कोठी रा कड़ा सेंग टूटग्या । भगवान री किरपा इसी हुई क जिण ठौड़ केसोदासजी ऊबा हा उण ठौड़ कोठी रो अेक कड़ो टूट तिरछो होय सामली भींत रै अड़ग्यो जिण सूं ढंसियोड़ी रेत सूं केसोदास जी नीं दबिया अर बिल्कुल सुरक्षित बचग्या-कठै फूल री छड़ी भी नीं लागी । आखी रात अै ईस्वर रो सुमरण करता रिया । परभात में जद सूरज उगियो तो आं नै परकास रो अेक चमको दूर आकास में तारा ज्यूं टमकतो दीसियो जिण सूं आं रा मन में जीवन री आसा जागी । बात दरअसल आ ही क कोठी री झुरी रै आसै पासै कोई से (सेही) आप रो बिल खोद राखियो हो जिण सूं तावड़ा रो चिलको केसोदास जी-नै दीस

रियोहो । से रै बारै में आ मसहूर बात है क बा बिल घंणू ऊंडो खोदै जिण सूं निरापद रह सकै । इण बिल सूं परकास रो चिलको अर प्राण वायु केसोदासजी नै बराबर मिळता रिया । आं हीमत कर नै आपरा हाथां सूं बिल रै दोनूं बगलां री माटी खोद खोद र नीचै राळणो सरू करियो अर ऊपर की तरफ चढणों चालू कीधो । नित्त रा जतरी सामरथ हुती उतरी माटी हटाता जाता अर ऊपर सरकता जाता । मसहूर है कै धरती री सतह माथै पूगण में वां नै ३१ दिन लागग्या । इण अरसा में अै अेक दिन रा हिसाब सूं अेक नींसाणी री रचणा रो क्रम राखियो । इकतीसवें दिन आं नै गोरखनाथ जी रा अर भगवान शिव रा दरसण विया । अै गद्गद होय गरू गोरख रा पग झालिया अर आंखियां सूं आंसू ढळक र गरू रा पगां रो पखाळण कीधो । गोरखनाथ जी कही, "केसोदास! भगवान् शिव थारै सूं राजी विया वां रा दरसण कर, चंढावो चढा अर मनैं गरू दच्छिणा दे ।" केसोदास ३१ दिनां रो भूखो प्यासो बिमूढ होय गरू रै मूंडै कांनी न्हाळतो बाखो फाड़ियां ऊभो रियो तद गोरखनाथ जी कही, "रै! इयां कांई सोचै? आ तीसवीं नीसाणी मनैं दे अर इकतीसवीं भगवान् रा चरणां में अर्पित कर ।" केसोदास जी सहमति में माथो झुकावियो अतरै तो दोनूं अन्तरध्यान हुयग्या । केसोदास जी बै दोनूं नीसाणियां तो भूलग्या बाकी २९ नीसाणियां उणां रै याद रई जकी आज भी मिळै । कुछेक टाळवां नीसाणी पाठकां रै पढण सारू परिशिष्टि "क" में दी जा री है ।

अध्याय 3

केसोदासजी री रचनावां

गाडण केसोदास जिण काळ में बिराजता हा (सोळवीं सदी रो उत्तरार्द्ध अर सत्रवीं सदी रो पूर्वार्ध) वो काळ जिण भांत ब्रजभासा, अवधी (हिन्दी रा प्रारंभिक सरूप) तथा मैथिली आद रो स्वर्ण-काळ हो! उणींज भांत डिंगल रो भी स्वर्ण-जुग हो । उण जुग में जतरी घणीं मात्रा में अर जतरी उन्च कोटि रो साहित सर्जित वियो उतरो अर उसो साहित फेरूं नीं रचीज्यो । उण जुग रा उद्भट अर मूर्धन्य चारण कवियां में प्रमुख हा, दुरसा आढा, माला सांदू, जाडा महेड़ू लखा बारहठ, ईसरदास बारहठ, नरहरिदास बारहठ गाडण केसोदास आद ।

गाडण केसोदास री प्रमुख रचनावां में,

१. नीसाणी विवेक-वार,
२. गज गुण-रूपक-बन्ध,
३. गोरख नाथ जी रा छन्द,
४. छन्द महादेवजी रा,
५. रामसिंघ करमसेणोत रा कवित्त,
६. राजा गजसिंघ जी रा कवित्त,
७. राव अमरसिंघ रा दूहा तथा बीजा फुटकर गीत, कवित्त, दूहा बडी तादाद में मिळै ।

केसोदास आपरा समै रा नामी हर भगत, कवि अर विद्वान मिनख हा । जिणरो समाज में घणों सनमान अर जस हो । राजस्थान री उण समै री राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परम्परा अर थिती रो केसोदास री रचणावां में भली भांत वरसण हुवै । वां री प्रमुख रचनावां पर आगला पृष्ठां में विचार कियो जासी ।

१. "नींसाणी विवेक-वार"

'नींसाणी विवेक-वार' कवि री सब सूं परसिध अर जग-चावी रचणा है । इण रचणा रो महत्व इण बात सूं भली भांत समझ में आवै कै राजस्थान में घणां लोगां नै आ रचणा कंठां याद ही अर वै इण रो नेम सूं पाठ करता । चारणां में तो अजे भी पुराणी पीढी रा मिनखां नैं आ नींसाणी याद है । नीसाणी छन्द रा अनेक उप-भेदां मांय सूं "नीसाणी वार" अेक उपभेद है । "विवेक" विषय माथै रचियोड़ी होवण् सूं इण रो नांव "नीसाणी विवेक-वार" राखियो है । इण रचणां रा दूजा नांव "नीसाणी विवेक-वारता", "नीसाणी वमेख-वारता" आद सही कोनी । "रघुवर जस प्रकास" कै माफक 'वार' नीसाणी रा लच्छण है - तुक अेक प्रत मात्रा तीस होय, तुकंत मगण अथवा रगण होय सो नीसाणी वार नांमां मात्रा उपछन्द छै ।

"मुण तुक प्रत जिण तीस मत, मगण क रगण तुकंत ।
वार निसांणी 'किसन' कवि, मत उप छंद मुणंत ।।"

इण रचणां री जगचावी होवण रो अेक प्रमाण ओ भी है क इण री जगां जगां हस्त लिखित प्रतियां आज भी मिळै । इण सूं पाठा फेर भोत हुयग्यो अर मूळ पाठ रो बेरो कोनी पड़ै ।

'विवेक-वार' नीसाणी रो विषय वेदान्त है पण इण कठिण अर सूखा विषय नै जिण सरळ अर रुचिकर ढंग सूं कवि आपरी रचणा में उतारियो है उण सूं बींरी असाधारण प्रतिभा अर सुच्छम दीठ रो बोध हुवै । दरसण तत्त रा परतख विवेचण रै लारै भगती-भाव रो सम्पुट, रचना नै काव्य मयी अर घणी रोचक बणाय दीधी । कवि री समन्वित दीठ उणरा तत्त ग्यान अर भगवद् भगती रो परसाद है जको मामूली समझण वाळा पाठक रा हिया में भी परकास करबा में समरथ है । हरिरस रा प्रणेता जगठावा भक्त कवि ईसरदास जी री राय में कवि इण रचना नै बणाय र मोटो परमारथ कीधो है; जिण सूं वो चारण जात री १२० साखां रो सिर मोड होइग्यो है :

"नींसाणंद नींसाण, केसव परमारथ कियो ।
पोह स्वारथ परमाण, साखां सौ बीसां सिरै ।।"

२. नीसाणी री भाषा अर सैली

'विवेक-वार' नीसाणी री भाषा उण समै री सरळ राजस्थानी (डिंगळ) भाषा है जिण में पंजाबी अर ब्रज भाषा रा सबंदा रो प्रयोग मोकळो हुवो है । डा. हीरालाल माहेश्वरी आपरी पुस्तक 'हिस्ट्री आफ राजस्थानी लिट्रेचर' में 'खड़ी बोली' रो मिलावो मानियों है । पण आ बात सही नंह लागै । क्योंक उण टेम खड़ी बोली रो जलमही नीं वियो हो अर किणी रूप में ही भी तो या इण नांव सूं नीं जाणी जावती । दर असल पंजाबी रा प्रयोग सूं ही या खड़ी बोली आठै । कठै कठै ब्रजभाषा रो भी मिलावो है । पंजाबी सवदां रो प्रयोग इण बात रो अेक प्रमाण है कै कवि रो बाळपण पंजाब में बीतियो हो अर पंजाबी रा संस्कार रै कारण ही वार-नीसाणी में रचना कीधी । श्री मूळचंद 'प्राणेश' आपरा लेख में या बात मानी है के पंजाब मे "वार" री रचना घणी लोक प्रिय हैं जथा "चण्डी दी वार", "गरु खालसा दी वार", "जै मल पत्तै दी वार" तथा "बंदा बैरागी दी वार" आद । पंजाबी रा असर रै कारण ही "थी", "दा", 'आं' प्रत्ययां रो हर छन्द में मोकळो प्रयोग है ।

नीसाणी री सैली प्रसाद गुण सूं भरी पूरी है जिण सूं सरळ अर सुपाठ्य है । साधारण आदमी भी इण नै याद राख सकै । बीच बीच में औखाणां अर कहावतां रा प्रयोग सूं रचना घणी सुवावणी बणीजी है । कवि रै खनै परम्परा अर ग्यान रो बिसाल भण्डार हो । "विवेक-वार नीसाणी" उन्तीस छंदां रो अेक छोटो सो ग्रन्थ है । सरू में कवि मंगळाचरण रूप में ईश्वर री सरब व्यापकता अर बिराट रूप रो बखांण करतां उणरा निरंजण, निरगुण रूप नै "प्राणां हंदा प्राण" कह 'र सुमरियों है । उण री सरब व्यापकता अर सामरथ सारू बखाण कीधो है "तोरी किण हिं न ताणवी करड़ी कब्बाणं" और ईमानदारी सूं स्वीकारियो है के "तूझ बडाई बरणवूं हूं केहा जाणं" अर्थात आपरी बडाई रो बखाण कर सकूं अतरो ग्यान म्हौर में कठै ?

खास खास छंदां रो सार संक्षेप पाठकां री सुविधा खातर, नीचै

दियो जाय रियो है :

हे प्रभु! तू ही आदि है, तू ज्यो करै सो हुवै,

"जो आरंभै सो हुवै, लीला आपाणी
पाणी हन्दा घी करै, घी हन्दा पाणी"

तू घड़ै भी है र भांजै भी है, थारी माया अपार है

"घड़ि घड़ि भांजै, भी घड़ै, पैदास पुराणी
तूझ बिनाण न जाणहीं, करतार विन्हाणी"

थारो सरूप किसो है? थूळ रूप सूं थूं आकार में आकास सूं ऊंचो, पताळ सूं ऊंडो, जमीं सूं चौडो, परबत सूं बडो, पाणी सूं पतळो, धुवां सूं झीणों, हवा सूं भी हळवो है-थारो कोई प्राण है न पिण्ड है । तू हद भी है अर बेहद भी । थारै रोम, रोम में ब्रहमंड हैं :

"ऊंचा बोह असमाण् थी, पायाळ थी ऊंडा
जम्मी थी चौड़ा अधक, मेरहिथी वड्डा
पाणी हीं थी पातळा, परमाण पचंडा
धूंवैं हीं थी झीवणा, कुछ्छ प्राण न पिंडा
बाकी हळवा बाव थीं, बहळा बळविंडा
हद ही थी बेहद अपार, रोम रोमां ब्रहमंडा"

सुछम रूप सूं तू फूलां बिच गंध, तिलां बिच तेल, लोह पाथर अर लाकड़ में अगन, थणां में दूध, दूध में चीकट, सूरज में तावड़ो, मन अर पवन में चेतणा, माया, कांसी में सबद, पाणी में चांद री पड़छाई, दरपण में छाया, घट घटरै मांय नूर-अै सेंग थारा ही सुछम रूप हैं :

"फूलां मध्धे बासणा, तिल तेल पिड़ाया
बेसन्नर लक्कड़ पखाण, तिम लोह लुकाया
थण मझि खीर सरीर जिम, कुदरत्तिक माया"

प्रभु! तू ही मच्छ है, तू कूरम है, तू आदि वराह है, अेक कानी तू हिरणाकुस-रावण है तो दूजै कानीं नरसिंघ औतार अर राजा रामचन्द्र भी तूही है । तू ही कृष्ण है अर तू ही कंस है । मिनख, देव, कीड़ी, कुंजर, नाग सबां में तू ही है । तू ही बुद्ध औतार है,

तू ही काफर है । तू निराकार भी है अर साकार भी । सब ठौड़ तू ही तू है :

"जेथै तेथै जोइये, तो बेजा तागा
तूं हीं तूं हीं अेक तूं, हूं अेता जाणा"

कांई हिन्दू कांई मुसळमान, कांई छत्री वैश्य, कांई सूद्र कांई ब्राह्मण, कांई बूढा कांई तरुण, कांई फकीर कांई गिरस्ती सब में तू ही तू है । हद भी तू ही है अर बेहद भी तू ही । इण संसार में सगो तो तू ही है बाकी तो सब बिडाणां हैं । तू अंतर जामी है, सांचो है अर सांचां रो भीडू है । आतमा री डोर परमातमा (करतार) रै हाथ है । मिनख तो नागो ही जलमै अर नागो ही मरै इण वास्तै उण सांई सूं मन रा काचा तागा वाळी गांठ जोड़ो ज्यूं भव रो भय भागै । इण संसार रो तो कोयल अर काग रो सनमंध है :

"पिंडन नग्गै आवणां, भी जाणा नग्गै
सांई सूं मन संधिये, ज्यूं काचै धग्गै
लिव लागै रहमाण सूं, भव सांसा भग्गै
सनमध इण संसार दा, जिम कोयल कग्गै
पिंड प्राण अैसा संजोग, ज्यूं म्यान खड़ग्गै"

जिणरा नांव नै ब्रह्म, इन्द्र, शिव, सुक अर सनकादिक सरावै उण परब्रह्म रो भेद कोई भी नीं जाणै । नंह उण रो कोई बरण है, न उनमान है न बो सफेद है न स्याह है । न बो किणी थान में थित है, न उण रो कोई गाम धाम है, न ठौड़ है न ठिकाणों । बो मरबा वाळा नै जिवाड़ दे अर जीबा वाळा नै मार दे, तिरबा वाळा नै डबोय दे अर डूबबा वाळा नै त्यार दे । सूना, उजाड़ देस नै बसाय दे अर बसता नै उजाड़ दे । ठरता नै जाळ दे अर जळता नै ठार दे । कीड़ी नै कण अर हाथी नै मण पूरवै । उण करतार री करणी की बळिहारी है :

"कीड़ी कूं कण पूरवै, मण मेंगळ चारै
अनळ पंख आकास का, दिन चूंण दिवारै

• • •

कुदरत्ती करतार की, करणी बलिहारै
रिजक, मौत, आबे हयात, उस अल्ला सारै"

उण सांई नै साचा मिनख ही प्यारा हैं । संसार रै मांय सांचा लोग जियां क हरिश्चंद्र अमरीख, पहळाद, नौ नाथ, सात रिसी, मुहम्मद पैगम्बर आद सब सांच रै पाण ही अमर हुवा हैं । सांई सदा सच्चां रै नेड़ो नै झूठां सूं दूरौ है । सांचा सूरबीर संसार सूं बिरत होय परमात्मा में रत हुवै । कामण अर कनक अै बिख बराबर है आं रो लोभ अकारथ है क्यूं कै काया रूपी कमठाण तो खिण में नासवान है । जीवन री डोर तो उण अलेख रै हाथ है । ओ संसार हाट रो बजार है इण में सब आप आप रो करम रूपी किराणों लेयर आवै । कोई तो नफो कमाय ले अर कोई मूळ नै ही ठगा जावै :

"डोरी हाथ अलेख कै, सोइ संग बंधाणा
पूरण हारा पूरवै, दिन पाणी दाणा

• • •

हटवाड़ा संसार दा बाजार मंडाणा
हिक्कां लाभ बिसाहिया हिक मूळ ठगाणा"

ईश्वर रै नजीक सब बरोबर हैं । उणरी जोत सूं ही सूरज अर चांद में परकास है । बो हीमत अर हक रो मद्‌दगार है । काळ रूप में बो अजरायल डाकी है ज्यों खलक नै गैब री चाकी सूं दळतौ रै वै । थोड़ा उणरा हाथ में है थोड़ा मुख में । सब काळ की फाकी है । इण वास्तै उण सांई सूं डरो अर उण नै सुमरो :

"हिम्मत हक्क हलाल है, रहमाण रजा की
मोह सराब खराब है, छक ऊमत छाकी

• • •

धरिया तन दा क्या गुमान, जम सूं कुण बाकी
रोज गिणंदा दम गिणै, अजरायल डाकी
खलक दळंदा पलक में, गैब हंदी चाकी
कुछ मुख में कुछ दसत में, सब दुनियां फाकी
काळ रहंदा ठाळ मंडि, जुग रोजी जाकी

सांई डरिये सुमरिये, क्या आसिक आकी"

उण मंडण हारे (चित्रकार) किसा चितराम मांडिया हैं? उण री बेहद कारीगरी री कोई हद काय नीं न उणरी कोई कीमत आंकी जाय सकै । आ संसार रूपी अेक सराय है जिण में अेक आवै अर अेक जावै है । इण री उतपत अर परळै सेंग नटबाजी रा सा ख्याल हैं । दिन में कतरा कोड़ खप जावै अर उण सूं सवाई सिस्टि हो जावै । जलमणा, मरणा अर परणणा, अै ही दीठ पड़ै । इण सेंग क्रिया कळाप सूं बो अलेख अळघो रहै । आसा, त्रसणा, ममता, झूठ, लोभ, काम, क्रोध अर मोह री किसीक आग बीं बळाय राखी है? इण सेंग सूं छुटकारो भोत कठिण है, कोई बिरलो ही सूरमा आपा नै भुलाय उण रहमाण सूं लिव लगावै अर सतगरू री किरपा सूं उण अदृस रा दरसण पावै । बो परब्रह्म तो सागर रूप है उण में सेंग भूत प्राणी समावै । जळ री बूँद ही हुवै पण बूंद-बूंद सूं ही भरपूर समंदर है :

"बुंद मिळी दरियाव सूं, ज्यूं बूंद कहाई
घट घट नूर खुदाय है, भरपूर खुदाई"

खुदा रो नूर घट घट में है जिण सूं खुदाई भरपूर है ।

बो सांई साध पुरसां नै तारै अर असाधां नै डबोवै । मिनख करमां रा बन्धण सूं अकारथ जलम खोवै । तत्त्व री पिछाण नंह होवण सूं कोई लाभ नीं मिळै । जियां के पाणी नै बिलोयां घी नंह नीसरै, सांच नै छोड 'र झूंठ पकड़णैं सूं आतम बिस्मरण ही हुवै । धणीं नै छोडर पराया नै भजियां किसो फळ मिळै? काळ आयर गळो दाबै तद रोयां कांई हुवै? आखै जळम बिख ही बिख बायो हुवै तो अमरित कठा मिळै? मिनख री कोई गिणत कोय नी । करमां रा भोग तो भोगणा पड़ै । काळ का नगारा रात दिन माथै बाजै । अेक दिन अै धरियोड़ा आकार पड़ जाणां छै । मूरख तो माया रो काजळ आंजियो राखै अर उण निरंजण नै भूल संसार में फंसियो रहै । खुद अगर आंख मींची राखै तो जग अंधेरो ही हुवै । इण देह रो अेक बो पैदा करवा वाळो ही सगो है । बो अविगत चेजारो इण सरीर रूपी देवळी रो चिणण हार है । बो

आपही देवता नै आप ही पुजारो है । बो आप ही बिणास अर सिरजण रा ख्याल देखै :

"धणी बिहूणा कज्जड़ा, आदम्म बिचारा
करम कमाई भुगतिये, किस हन्दा सारा
सिर बज्जै जमरांण का, घड़ियाळ नगारा
दिन अेकण पड़ि जायगा, धरिया आकारा"

ईश्वर रा निरगुण, निराकार रूप रो बखांण करतां कवि कहै क उण रो कोई लिंग नहीं, न वो पुरख है न नार, न उणरै अंग है न आकार । मूंडो, सरीर प्राण, पग कांई भी नीं पण फेर भी उण रो बेहद बिस्तार है । बो आंख, कान, नाक अर सरीर हीण है । न उण रै प्राण है न बाणी है न इन्द्री है । न जात है न बाप है न मा है । बो तो कुळ हीण है जिण रो न कोई रंग है न रूप है । न वो लाल है न पीळो है न स्याह है न सफेद है । बो तो वरण हीण अेक ॐ कार है । न जाडो है न पतळो है, न हळको है न भारी है, न छोटो है न मोटो है, न बो कंवळो है न करड़ो है, न खारो है न कसायलो, न मीठो है, न तातो है न ठंढो, न दूर है न नेड़ो । बो तो साचा लोगां रो प्यारो है । न बो बारै है न मांय है, न भरियो है न रीतो । न बाळक है न तरुण अथवा बूढो । न परण्यों है न कंवारो, न धायों है न भूखो, न माया न छाया, न पाप न पुण्य, न जीत्यो न हारयो । न बो आवै न जावै । न बीरै सुख है न दुख है । न उणरी कोई थिति है न घरबार । न सुन्न है न थूळ, न दातार है न क्रपण है ।

अतरो ग्यान देतां थकां भी कवि आप रै ग्यान अथवा विवेक रो कठैई दम्भ नीं करै, बो साफ सबदां में कबूल करै,

"किण देख्या किसकूं मिळ्या, कैसा करतारा
रूप न रेख अलेख कै, कुछ वार न पारा ।।"

आ दम्भहीण स्वीकारोक्ति उण री महानता रो बोध करावै ।

कतीक नीसाणियां में जोग री गूढ़ प्रक्रियावां रो भी बखाण मिळै (नीसाणी संख्या २२ सूं २४ अर कठै कठै बीजी

नीसाणियां में इसो बखांण मिळै) ।

संसार री असारता नै मानतां थकां भी कवि करमां री परधानता माथै काफी जोर देवै तथा सदाचार नै सत्य रै आचरण सागै परमात्मा पर अटळ भरोसो राख उणरो ही सरणों गहणै री सल्ला देवै और बुरा करमां सूं बचबा रो उपदेस करै :

"रिजक सदक नित बांटणां, तिणथी निसतरणा
फखर दियंतां ही भला, मक्कर परिहरणा

• • •

चोरी, जारी, मुखबरी, बद्दी बीसरणा
सत, संतोख ग्यान मोख, नेकी आदरणा

• • •

सांई हन्दी सिर रजा, चित साहिब चरणां
ओट उसी दी तविकये, उस ही दा सरणां"

ज्यो साध पुरख परमातमा सूं रत्त मत्त रै वै अर दुनियां रा ख्याल निरलेप भाव सूं देखै, उण सांई रो सरणो ताकै उण सूं जमदूत भी डरपै । धीरज, ग्यान अर ध्यान सूं ही भगवान मिळ सकै पण ज्यो लोग उण नै भूलर माया, मोह में फंसै वां रा भाग फूटै । अन्त समै में जमीं में गाडिया धन, दौलत, महल माळिया, स्त्री, पिरवार, हाथी घोड़ा सेंग अठै ई रह जावै अर मिनख नै रीता हाथां अेकला नै हीं जावणों पड़ै :

"गरथ जमीं बिच गाडिया, केतेक महल्लै
मूरख मूळ न चेतिया, क्या बंधै पल्लै ?

• • •

हय गय माल बिलातियां, पर हत्थ विकल्लै
बर नारी, घर धौळहर, सब कीयै ढिल्लै"

करम रो महत्व बतावतां थकां कवि कै वै क बिना सतकरमां रै कीधां कोई सुख पावण री आस क्यूं करै ? घणां सजीव दृष्टांतां सूं इण बात नै सिद्ध करतां पाठकां सूं ज्यो सवाल बै कीधा है वां रा जवाबां सूं ओ कथन कवि स्वयम् पाठक सूं ही सिद्ध करावियो है । बै कैवै क बाळू रेत नै घांणी में पेळियां कांई तेल नीसरै ?

आकड़ां री रुखाळी कियां आंबा कठा सूं मिळै? बिख (जहर) री खेती कर कोई. अमरित कियां पाय सकै? पाणी नै बिलो 'र माखण कींकर निकाळ सकै? भेड री पूंछ पकड़ कोई समंदर लांघबो चावै? रंक नै माल बेच र कोई लाभ लेवणों चावै? गधैड़ा पलाणर गज-बन्ध कहाबो चावै? कियां हो सकै अै सब? दैत भूतां री साधणा कर देवतां सूं कींकर मिळ सकै? डाकण मन्तर री साधणा कर सिद्ध कियां बण सकै? काणी नार काजळ घाल र आंखियां लुभावणों चावै? आंधो मिनख कोई नै गेलो कियां बता सकै? जुवारी सूं जीतर कोई धन कमावै? उथला (कम गहरा) पाणी में गेर कोई नाव खेणों चावै? लगंड़ो नाचबो चावै? गूंगो गीत गाय रिझावणों चावै? बांझ त्रिया नै घर में घाल कोई पूत खिलावणों चावै? जिण भांत अै सेंग बातां असंभव है उणींज भांत ईश्वर सूं बेमुख होय मुकती नीं मिळ सकै । उण प्रभु री सेवा सूं हीं सब सुख मिळ सकै ।

कवि आखरी नीसाणी में परमेसर सूं अरदास करै कै पर ब्रह्म! तू सब जीवां रो पोखण, भरण करै । तू सबां रो आधार है । तू सबां रै मांय विद्यमान है फेर भी सब सूं अळघो है । तू पताळ सूं ऊंडो अर आभै सूं ऊंचो है । तू चौरासी लाख जूण रा फेरा मेटण वाळो है । ज्यो तनैं नहीं जाणै वां रा दिलां में अंधेरा हैं । तू घण दातार, घण सहण है, घणां सूं भी घणों है । तू बळवानं सूं बळवान अर नवां सूं नवों है ।

"तूं घण दीहा घण सहण, तूं घणां घणेरा
जुग तो जूना हुय गया, तूं नवां नवेरा"

तू चौड़ो भी है चापड़ो भी है, लंबां में लंबो है । तू हाजरां हजूर है, नेडां सूं नेड़ो है । साध पुरसां रो कलपब्रच्छ है । थारै सूं बडो कोई नहीं, तू ही सांचो धणी है । तू ही आद है तू ही अन्त है । तू अधकां सूं अधको है । तू आद हीण है, तू बाळक भी है अर बूढो भी । हे! जगत रा मांडण हार तू केसव रा करमां रा फेर नै मेट ।

गाडण केसोदास आं २९ नीसाणियां में तत्त्व ज्ञान अर वेदान्त दरसण रा सिद्धान्तां नै बहोत सरळ अर सुबोध भासा रै मांय साधारण

सूं साधारण मिनख री समझ में आवै उण भांत समझाविया है । शंकराचार्य रा अद्वैत अर भक्तिधारा री समन्वित दीठ री आ रचना राजस्थानी साहित री अेक अणमोल धरोहर है जिण मे इसा दुरबोध अर नीरस बिसै पर कवि आपरी वाणी री सरसता रो अमरित घोळ नै इण रचना नै इतरी चावी बणाय दीधी क लोक-मानस में इण रा पाठ री रुचि आंपू आप पैदा हुवै । दूजी बिसेसता इण रचना री आ है कै इण रा हर पद्य में ईश्वर अर अल्ला नै अेक मानण रो आग्रह है जको साम्प्रदायिक अेकट रो बीज मन्तर है अर इण मौजूदा समै में देस में इण रचणा रै प्रचार, प्रसार री जरूरत घणी अहम् है । कवि री बीजी रचनावां में सब सूं मैताऊ रचना "गज गुण रूपक-बन्ध" है पण कवि री लोकप्रियता अर नांव जतरो "नीसाणी विवेक-वार" रै कारण है उतरो बीजी रचनावां सूं नीं है ।

३. "गज गुण रूपक-बन्ध"

गाडण केसोदास री श्रेष्ठतम रचना "गज गुण रूपक-बन्ध" जोधपुर नरेस महाराजा गज सिंघ री वीरता पराक्रम अर रण-कोसल री भूंडै बोलती तसबीर है जिण नै कवि पांचूं देवां, सरस्वती, गणेश, महादेव, विष्णु अर सूरज री बन्दणा सूं प्रारंभियो है । ग्रन्थ कोई २५० मुद्रित पृष्ठां रो आकार में है जिणरो प्रकासण राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा सन् १९६८ ई. में हुवो । गज गुण रूपक-बन्ध अेक बेजोड़ प्रबन्ध काव्य है । परम्परा रै माफक बन्दणा रै पाछै राठौड़ बंस रो इतिहास नै पीढियां रो बरणन है । महाराज कंवार गजसिंघ जी रो जळम, वां रो बाळापण, जवानी, पुरसारथ, दानवीरता योग्यता तथा संगीत प्रेम आद गुणां रो बखाण घणै मोहक ढंग सूं कीधो है । कवि रा ही सबदां में :

"कमळ बीच ससिकळा, कळा वडती जग वंदै ।
कळा हीण खळ हुवै, जेम निसि पूनम चंदै ।।
भुज विसाळ लंकाळ, वरण झाळाहळ सुंदर ।
भरि मातै भाद्रवै, जाणि ऊगो भासंकर।।

बत्तीस लखण सुभ आचरण, बाळपणै हूवौ तरुण ।
कमधज्ज कुंवर कमधज्जहर, राजहंस मूरति मयण ।।

• • •

अेक राव थप्पइण, अेक रावां ऊथप्पण ।
अेक राव गढ लियण, अेक रावां गढ अप्पण ।।
अेक राव परिभवण, अेक रावां पड़िगाहण ।
अेक राव जड़ गमण, अेक (राउ) सरणै रक्खण ।।
इक राव रंक करि रोळवण, अेकां आलंबण थियौ ।
कमधज ब्रजागि 'गज केसरी', आगि खाइ इम ऊठियौ ।।

• • •

कोटां मेबट गढ गिलण, सुरिताणां उरि सल्ल ।
"गाजी साह" अभिन्नमौ, दादो 'माळ' दुझल्ल ।।"

इण ग्रन्थ में कवि गजसिंघ जी नै, 'गजण', 'गाजीसाह' 'गज केसरी' 'गजबन्धी' आदि नामां सूं संबोधित करिया हैं ।

बादसाह जहांगीर रो सासनकाळ अकबर महान रा काळ रै मुकाबलै कठिनायां अर अव्यवस्था भरियो हो । अकबर रा सासन री व्यवस्थावां अर शान्ति करीब करीब चरमराय गी ही । भारत रा अतरा बिसाल राज रो सुप्रबन्ध जहांगीर जिसा आळली अर विलासी सम्राट रै बस री बात नीं ही । अकबर री हिंदुवां नै तुष्ट राखण री नीति अर बिसेस कर राजपूतां रै सागै रोटी बेटी रा सनमंध ही मुगळ सासन री जड़ जमावण वाळा बीज मन्तर हा जिण रै पाण भारत में मुगलां केई पीढियां तांणी राज कीधो । जहांगीर रा काळ में उत्तर तथा दिक्खण दोनूं ही तरफ बगावत रो बिगुल बाजियो पण जोधपुर, बीकानेररा राठौड़ां, जैपर रै कछवाहां अर बीजा राजपूत राजावां री पूरी पूरी मदद मुगल सम्राट नै मिळी जिण सूं दिल्ली रो दबदबौ कायम रह सकियो । दिक्खण री बगावंता रै दमण में गजसिंघ जी रा पिता सूरसिंघ जी तथा वांरै सुरगवास पछै खुद गजसिंघ जी री मदद सूं साही प्रभुत्व कायम रहियो । गज सिंघ जी नै घणकरै समै दिक्खण में रहणो पड़ियो जठै वै आपरा पराक्रम अर रण चातुरी रै पाण बिद्रोहियां रो दमन केई जुधां में करियो

अर हर जागां साही फौजां नै बिजय दिराई । पण जहांगीर साह रा सासन में नूरजहां बेगम रा राजनीतिक प्रभाव रै हावी वियां पछै ग्रह कळेस बधियो जिण सूं साहजादा खुर्रम री बगावत री नौबत आई अर साम्राज्य री शक्ति खीण होय, देस में अव्यवस्था फैली अर जन जीवन पर बुरो असर पड़ियौ ।

गजसिंघ जी आपरी किसोरावस्था में ही राज काज री देखभाळ में लागिया हा क्यूंक महाराज सूरसिंघ जी नै बादसाह दिक्खण में भेज दिया हा । सूरसिंघ जी रै दिक्खण गयां पछै महाराजकंवर गज सिंघ जी जोधपर रो सासन ही ठीक ढंग सूं नीं संभाळियो बल्कि मेवाड़ रा नाडूल परगणा माथै कब्जो करियौ अर सिरोही रा राव सुरतांण द्वारा रायसिंग जी रा बध रो बदलो काढण ताणी सिरोही माथै हमलो कर बिजै पाई । सूरसिंघजी रा दिक्खण परवास रै दौरान ही जाळोर रा सासक पहाड़ खां सूं बादसाह नाराज हुय उण नै मरवाय दियो अर जाळोर पर कब्जो करवा खातर गजसिंघ जी क-नै फरमाण भेजियो । गजसिंघ जी राठौडां री सेना लेय जाळोर माथै हमलो करियो अर आपरी कूटनीतिक सूझबूझ सूं बिहारी मुसळमानां (पठाणां) कांनी सूं नाराणदास काबा अर केई और राजपूतां नै फोड़ र आप कांनी कर लीन्हां जिण कारण थोड़ा सा दिनां में ही उण जाळौर गढ माथै कब्जो जमाय लीधो, जिण नै तोड़वा में अलाउद्दीन खिलजी जिसा सेनापती नै १२ बरसां ताणी घेरो राखणों पड़ियो हो । इण घटणा री साख रो अेक पुराणों दूहो मिळै :

"बारा बरस अलावदी, पड़ फीटौ पतसाह ।
चढियां घोड़ा सोनगढ, तैं लीन्हों गजसाह ।।"

जाळोर बिजै रै बाद गजसिंघ जी करमसेन पर, जो लाडणूं में हो, हमलो करियो ज्यो आपरो जीव बचावण खातर ठौड़ ठौड़ भागतो फिरियो अर गजसिंघ जी उणरो पीछो करता रिया । पण इण बीच ही महाराज सूरसिंघ जी रो मिती भादवा सुदी नौमी संवत् १६७६ विक्रमी नै दिक्खण में ही महकर रै थाणै सुरगवास हुग्यो । गजसिंघ जी आसोप रा ठाकर कूंपावत राजसिंघ नै जोधपर संभाळय दिक्खण नै रवाना होयग्या । जठै बिजै दसमीं रै दिन बुरहान पुर में वां

रो राजतिलक वियो । आपरै पिता री भांत ही गजसिंघ जी दिक्खण में बिद्रोहियां रो दमण कीधो अर जगां जगां केई जुध कीधा जिंका में साही फौजां री बिजै हुई । आखर में मलिक अंबर का सलाह मसविरा सूं दिक्खणी फौजां बादसाहरी फौजां सूं सुलह् कर लीन्हीं अर आधीनता मंजूर कीन्हीं । दिक्खण री मुहिम में गजसिंह् जी री बीरता री तारीफ में अब्दुल रहीम खांन खाना बार बार खरीता भेजिया जिण सूं राजी होय बादसाह् गजसिंघ जी नै "दळ-थंभण" रो खिताब बगसियो । कवि रा सबदां में :

"साह् दिस्स मेलिया, खांन खानां लिख कागळ ।
ए अजीत रट्ठवड़, किता जे जीता कद्दळ ।।
सबळा सत्र संघरे, छळे सबळे पडि-गिरिया ।
जेथ भिड़े दळि पड़े, तेथ आडा भुंज धरिया ।।
कळिमूळ निभै भण कळिमथण, ऊभौ सिरि अंबर डहै ।
पतिसाह् परीछै ए प्रसिध, "दळ-थंभण" राजा कहै ।।"

बादसाह् सह्जाह्दा खुर्रम री अगुवाई में अेक बिसाल फौज दिक्खण भेजी जिणरी कमान भी सह्जादै रठौड़ गजसिंघ जी नै सूंपी अर बुरहानपुर में दिक्खणी फौजां सू मुकाबलो वियो जिण में दिक्खणी भाग छूटिया ।

"ताबीन दीन ह्रिंदू तुरक, अउब पेख आतम सकति ।
'दळथंभ' दळां बिच थप्पियौ, जैतखंभ सेनाधिपति ।।"

इण बिजै पर खुशी होय बादसाह् गजसिंघ जी रो मनसब ५000 जात कर दीन्हों अर नगारा, तौग, सुनह्री साज रा घोड़ा अर जाळोर नै सांचौर रा पिड़गना बगसिया :

"मह्ण रम्भ मात्थियौ, तेग तुड़ि दिक्खण मारी ।
पातिसाह् हुय प्रसन, हुकम किय पेंच ह्जारी ।।
मंडोवर नर-समंद, सीस मनसब बध्धारे ।
दे नग्गारा तौग, तुरी साकत सिंगारे ।।
फुरमास सुपारिस मोकळी, दिढ राजा दळ-थंभ तूं ।
जागीर दीध जोगणिपुरै, कणियागिर सांचोर सूं ।।"

इण भांत दिक्खण री फौजां लगातार अेक बरस ताणी साही

फौजां सूं सिकस्त खाती रई । बालापुर, महकर, मलिकापुर, खानदेस, **मुग्गी** पट्टण, महाराष्ट्र बरार, अहमद नगर अर सेत-बन्ध रामेश्वर **आद** मुकामां पर गजसिंघ जी जुध कीधा अर फतह हासिल **कीधी** । नूरजहां बेगम रै परभाव में आय जहांगीर साह खुर्रम नै **तखत** सूं बंचित करण रो मनसूबो बणावियो जिण री खबर खुर्रम **नै दिक्खण** सूं लौटती बार लागी । खुर्रम बागी हुयग्यो अर फौज **रै लौरै** बुरहानपुर सूं मांडव; पछै मांडव सूं अजमेर अर सांभर रै **रस्तै** रणथम्भौर होतो सीकरी पूगो जठै साही फौज सूं मुकाबलो करबा **खातर** आपरी सेना नै तीन भागां में बांटी । अेक भाग री कमान **भीम** सीसोदिया नै, दूजारी सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत **रायरायांन**) नै तथा तीजा री खांनखानां रा बेटा दाराब खां नै **संभळाई** । साही फौज सूं लड़ाई में खुर्रम री सेना जीतती लागी । साही फौज मांय सूं अब्दुल्ला खां खुरम सूं जाय मिळियो जिण सूं उण रो पालड़ो और भारी हुयग्यो पण इणी टेम खुर्रम रो सेनापति सुन्दर ब्राह्मण मार्‌यो गयो जिण सूं उणरी फौज में भगदड़ मचगी अर बिजै श्री साही सेना रै हाथ लागी । खुर्रम भाज खड़ो वियो । बादसाह आपरा वजीरां की सलाह पर जोधपुर नरेस गजसिंघ जी नै बुलावो भेजियो अर लाज बचावण री बिनती कीधीं । कवि केसोदास रा सबदां में :

"आप कहै पतसाह अचग्गळ, 'गाजीसाह' कमण तो जांमळ ।
तूं खु:सांण हिंदुवां आगळ, किलंबां राइ लिखे इम कागळ ।।
खांडै राव सिरै नव खंडां, मारू तो सिर भारथ मंडां ।
भारथ भळायो तो भुबडंडां, मांडे तूं थांभा ब्रहमंडां ।।
तूं राजा दळथंभ कहायौ, ए भर भार भुजै तो आयौ ।
इळ साइजादै दूंप उठायौ, पातसाह फुरमाण पठायौ ।।
हुकम लिखे मोकळियो हजरति, तांय पहूंतो जोधां तख्तति ।
कमध बडी तो पास करामति, पति मो रखी कहै दिल्लीपति ।।"

बादसाह रो सनेसो पाय गजसिंघ जी मि. बैसाख सुदी १२ संवत् १६८० नै दिल्ली पूगा जठै साह भुजा पसार वां नै गळै लगाविया नै खेम कुसळ पूछी पछै खुर्रम सूं जुध करण रो बीड़ो दिरायो तथा

सहजादा परवेज अर महावत खां री फौज रै सागै रवाना कीधा । गजसिंघ जी सेना रै हरावल में रिया अर खुर्रम रो पीछो करता बराड पूगा जठै खुर्रम री फौज सूं झगड़ो हुवौ जिण में नबाब खानखानां कैद हुवा अर खुर्रम भाजर आसेर गढ, बुरहानपुर हो तो उडीसा अर ढाका आयौ, पछै इलाहाबाद अर जोनपुर की तरफ बधियो । गज सिंघ जी भी पाछो करता इलाहाबाद, कासी, गया री जात्रा करता टौंस नदी रै किनारै कोरटा में पूगर डेरा किया । खुर्रम उण टेम खैरगढ में हो । दोनूं फौजां रै बीच सिर्फ २ कोस रो आंतरो हो । गजसिंघ जी री फौज में आमेर रा राजा कछवाहा जै सिंघ जी, बीकानेर महाराज सूरसिंघजी, बुंदेलो बरसिंघ देव, सारंग देव, बहलोल खान अर आलम खांन आद सुभट हा । जद कै खुर्रम री फौज में भीम सीसोदियो (हरावल में) आपरा टाळवां जोधारां सागै हो । अब्दुल्ला खां, दरिया खां, पहाड़ खां भीम सिंघ राठौड़, बलू रो बेटो, पृथी सिंघ अर रामा रो बेटो हरदास वगैरा अनेक वीर हा ।

सहजादो खुर्रम आपरी सेना रो सेनापति भीम सीसोदिया नै बणावियो अर जुध रो सारो भरभार उणरै कांधः पर राळियो । खुर्रम भीम सीसोदिया नै बिरदावियो :

"तांम राण सीसोद, खुरम सुरतांण पड़ग्गर ।
मूझ सेन दळ-थंभ, आज कुण तूझ बरोबर ।।
दिल्ली दावा-मुदी, तुंहिज आगळ है रांणां ।
तो दादो 'संग्राम', ग्रहण मोखण सुरतांणां ।।
खूंमाण दळे खुरसांण सूं, कमण जुद्ध मंडै बियौ ।
'भीमेण' ऊठ 'अमरेस' रा, तो सिर नेत परट्ठियौ ।।"

आखर विक्रम संवत् १६८१ रा कातिक मास पूनम सनीसरवार नै दोनूं फौजां रो मुकाबलो हाजीपुर (पटणा) में हुवौ जिण में दोनूं तरफां रा हजारां बीर काम आया । राठौड़ गजसिंघ जी अर भीम सीसोदिया रै बीच घमसाण जुद्ध हुवौ जिण में भीम सीसोदियो बीरगति नै प्रापत हुवौ अर सहजादो खुर्रम भाग छूटियो । बादसाह री बिजै हुई ।

इतिहास री इण पीठ भोम माथै ही गाडण केसोदास रो "गज-गुण रूपक-बन्ध" रचियो थको है जिण में काव्य कोसळ रै अलावा इतिहास री परमाणीक सामगरी भी है अर केई नुवां तथ्य भी उजागर विया हैं ।

४. "गज गुण रूपक-बन्ध"-साहित्यिक मोल

साहित्यिक मोल री दीठ हूं "गज गुण रूपक-बन्ध" डिंगळ रो अेक अभूतपूर्व ग्रन्थ है ज्यो अपणैं ढंग रो पहलो प्रबन्ध काव्य है । इण रो सिरजण कवि आपरा परम्पराऊ ग्यान, अनोखी प्रतिभा अर विद्वत्ता रै पाण कीधो है । इण पोथी सूं पैलां री रचनावां में गाडण सिवदास विरचित "अचळ दास खींची री वचनिका", सूजाबीठू क्रत "छन्द राव जइत सी रउ", गाडण पसाइत रो "रणमल रो छन्द", "गुण जोधायण", "राव जइतसी रो पाघड़ी छन्द" (अज्ञात रचियता), खिड़िया जगा री, "बचनिका राठौड़ रतन सिंघ महेसदासोत री" आद उच्चकोटि रा काव्य ग्रन्थ हैं, पण प्रबन्ध री दीठ सूं सांगोपांग ग्रन्थ "गुण रूपक-बन्ध" री कोटि रो अेक भी नीं लागै । पद्मनाभ रो रचियोड़ो "कान्हड दे प्रबन्ध" जरूर अेक उच्च कोटि रो ग्रन्थ है पण उण री सैली अर भासा दोनूं ही डिंगळ री सुद्ध परंपरा सूं मेळ नीं खावै । "गज गुण रूपक-बन्ध" में चरित नायक जोधपुर नरेस राठौड़ गजसिंघ जी रा जीवन रो सांगोपांग चितराम है जिण नै कवि आपरी ओजस्वी बाणी अर तीखी प्रीतभा सूं भांत भांत रा छन्दां में बांध'र, अलंकृत सैली अर सरसता सूं डिंगळ काव्य रो अेक अलभ्य जगमगातो हीरो बणाय दीधो है ।

गजसिंघ जी आपरा बाळापण नै छोड आपरा जीवन रो घणकरो भाग रणखेतां में हीज बितावियो अर जुध री विभिषिका ही वां री दिनचर्या रो मुख भाग रहियो । राठौड़ गजसिंघ अेक इसो बीर सेनानायक हो जको कदे ही रण में हार रो मूंडो नीं जोयो । जैपर नरेस कछवाहा मानसिंघ (प्रथम) रै उपरांत गजसिंघ जी री जोड़ रो कोई बीजो सफळ सेनापति इतिहास में हेरियां भी नीं लाधै ।

इसा बांका बीर पुरष रा पूरा जीवन रो चितराम कवि आपरी कलम सूं जुध खेतरां में परतख-दरसी होय इण ग्रन्थ में खींचियो है । गजसिंघ जी रो ओ दस्तूर हो कै वै हरेक जुध में फौज री हरावळ में ही रैवता । ग्रंथ में खासकर गजसिंघ जी रा जुधां रो ही बर्णन है । फौज कसी री तयारी, हाथियां, घोड़ा, असत्रां सस्त्रां रा बरणन तथा बीर जोधारां रा पराक्रम, जुध कौसळ आद रा वर्णन जथा स्थान करिया हैं । जुध रत बीरां री मनोदसारो बर्णन भी जठै तठै देखण नै मिळै । पाठकां री सुविधा खातर, फौजां री तयारी, रवानगी अर परतख जुध रा मैताऊ अर मनमोहक बर्णन गुण रूपक सूं परिशिष्टि "ग" में दिया जा रहिया हैं ।

ग्रन्थ रा प्रारंभ में मंगळाचरण तथा गजसिंघ जी रा गुणां रा बखांण पछै कवि वां रा पिता सूरसिंघ जी रा राज-विभो रो घणों सांतरो बरणन करतां राज महलां, बजारां, तळावां बगीचां आद रो भी घणों रूपाळो बखांण कीधो है ।

भासा अर सैली

ग्रन्थ री भासा उण समै री प्रचलित सुद्ध साहित्यिक "डिंगळ" है जिण माथै कवि नै पूरो अधिकार है । सबदां री तोड़ मरोड़ भोत कम है अर जगां जगां मुहावरा अर औखाणां रा भी प्रयोग है जिण सूं ग्रंथ री सुन्दरता में चार चांद लागिया हैं । डिंगळ री परंपरागत सैली रो प्रयोग करतां थकां कवि आपरी मौलिकता नै हर जगां कायम राखण में सफळ रियो है । द्वित्त आखरां रो प्रयोग भी भौत जरूरी ठौड़ पर ही कियो है । भासा पर अठै, उठै पंजाबी रो प्रभाव इण ग्रंथ में भी दीठ आवै जिण रो कारण कवि रो बाळापण में पंजाब परवास परतख आठै । पंजाबी रा सबदां रा प्रयोग रा क्यूं नमूना :

"चंद दिपंदा वेखिये, जांण नखत्रां मज्झ"

• • •

"फजर हुवंदी फूलिया, जांण मलूकां बाग"

• • •

"जोत चारागां जगभगै, हेक हुवंदा रूप"

औखाणां रा नमूना :

"तब कहा दीजै थिग्गड़ी, जब फट्टै आकास"

• • •

"मूळ न मावै मारका, दोय खंडां इक म्यांन"

• • •

"मच्छगळागळ, दिल्ली मंडळ"

छन्द

काव्य रा प्रचलित खास खास छन्दां रो, बिसै वस्तू री दीठ सूं जथा-जोग प्रयोग कर कवि आप री विद्वत्ता अर छन्द-सास्त्र रा ग्यान रो परकास भली बिध करियो है । बिसै वस्तू रै माफक छन्द सिरजण में कवि सिद्ध हस्त है । खास खास छन्द जका ग्रन्थ में राखिया हैं वै हैं :

त्रोटक, भुजंग प्रयात, मोतीदाम, बीजूमाळा, काइब आद (संस्कृत रा छन्द) हैं । हिन्दी रा छन्द हैं, बे अखरी, बैताळ, पद्धड़ी, भ्रमरावळी, अरिल्ल, अर्धनाराच, चन्द्रायण चौपई, त्रिभंगी, नाराच, मोदिक, हणूंफाल आद । डिंगळ रा छन्द, गाहा, झंपताळी, डंडीयळ, तवत, दुपई दुमला, पोमावती, रसाउळा, सिंहावलोकण, सारसी, हाकुटिया आद हैं । कुल 45 भांत रा न्यारा न्यारा छन्दां रो पयोग इण ग्रन्थ में करियो है ।

अलंकार योजना

डिंगळ काव्य री परंपरा माफक ग्रंथ में "बैण सगाई" अलंकार रो निरबाह आद सू अंत तांई देखण नै मिळै ज्यो स्वाभाविक रूप सूं बिना किणीं खींच-ताण अर तोड़ मरोड़ रै जथा-स्थान सधतो रियो है । "बैण सगाई" में मोटा रूप सूं छन्द रा पहला चरण रो पहलो सबद जिम आखर सूं सरू हुवै बो ही आखर चरण रा आखरी सबद में आदि, मध्य अथवा अन्त में जरूरी रूप सूं आणों चाहिजै । जथा :

"धमळौ बापू धारियौ, बाळो है बळिवंड ।
धुरि माथो धूणै नहीं, भरि ओड़ै भूडंड ।।"

सगळा ग्रंथ में अनुप्रासां री छटा देखण जोग है । कोई छन्द भी इसो नीं लाधै जिण में कोई ओपतो अनुप्रास नीं मिळै । जुध रा बरणन में तो अनुप्रासां री कोरणी बरबस ही पाठकां नै मोहित कर देवै है :

"झट्टकै झाट औझड़ो झौड़ ।
फेरी फुरंत फारक्क फौड़ ।।
तांडळां डळां डूंगळां टूक ।
रुंडळां रुळां सीकळां रूक ।।
विप्पळां पळां आवळां वाढ ।
ग्रीधळां खळां साबळां गाढ ।।
साबळां हुळां मैंगळां सल्ल ।
ढैंचळां ढळां तूळहां ढल्ल ।।"

इणींज भांत 'वीप्सा', 'यमक', 'उपमा', 'रूपक' अर 'उत्प्रेक्षा' आद अलंकारां रो भी सुखद संयोजण दीठ आवै ।

उत्प्रेक्षा रो अेक मनमोहक उदाहरण

"राजा झूलरि राणियां, सोहै ईहीं भांति ।
किरि बेधांणै किरतियां, चन्दो पूनम राति ।।"

'उत्प्रेक्षा' अर 'उपमा' रो अेक सीरोळो उदाहरण देखबा जोग है :

"गुण धनंख धौंकार, भेर नीसाण निनद्दह ।
ईळा पुड़ि ऊपड़ै, विकट बंकी सरहद्दह ।।
धौम झाळ धड़हड़ै, प्रळैकर पाक दरस्सै ।
अगनि बाण पड़ बूंद, जांण ब्रहमंड बरस्सै ।।
चौफेर फिरै चतुरंग दळ, घण सरूप त्रसरी घडां ।
दळ-थंभ दखण आडो डहै, भड़ किमाड़ उत्तर भड़ां ।।"

रूपक अलंकार

वीर काव्य में जुद्ध रत जोधा नै भांत भांत रा रूपगां हूं बिरदावण री परिपाटी है । कठै तो उण नै सेना रूपी बरात रो

बींद बणायो जावै, कठै नाहर रै रूप में हाथियां रा दळ नै बिभाड़तो दरसायो जावै । सेना रा कूच रो रूपक हिलोळा लेवतै सागर सूं बांधियो जावै तो कठैई टिड्डी दळ सूं, ऊठती घटा सूं या आंधी सूं । गाडण केसोदास सेना रो रूपक जोगियांरी जमात" सूं बांधियो है जो उणां री मौलिक सूझबूझ अर पैनी प्रतिभा रो परिचायक है । जिण भांत जोगी संसार रा माया, मोहनै छोड 'र चाल पड़ै बियां ही जुद्ध रा माता बीरां रा जूथ जीवन री ममता माया नै छोड र आपरा प्राण निछावर करबा सारू कूच करै । जोगी सूं जोधा री मनोदसा री समानता, अनुभूति री गहराई अर सिल्प री चतराई रो नमूनो है :

"जिण साल जुआंण, करंत जरादी, जूसण बांधै जम्मजड़ा ।
हद ओप विटोप रंगावळि हाथळ, सू मात्रा करि सिद्ध खड़ा ।।
डिल खट्ट त्रिसूं डंड आवध डाबै, पौरिस रावत पूअरियौ ।
आवै ग्रहि कूंत दरग्गह ऊभा, थाट थिडंबै औथरियौ ।।
असटंग विभूत सनाह उपावै, लोह छतीस सिंघार लियं ।
सिध बारह पंथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप कियं ।।
कमधज्ज तजे मनमोह काया चो, वीरति सोह विसत्तरियं ।
तत ले निरबाण क राज तियाग, गोपीयचंद भरत्थरियं ।।"

"साङ्गरूपक" को ओ अेक अनोखो उदाहरण है ।

केसोदास जी असल में अेक साधू पुरस हा अर गृहस्थ में रहतां थकां बीतराग रो निरबाह करता हा । जगां जगां इण बात रो सबूत मिलै क वां रा भावां मांथै नाथ संप्रदाय अर जोग दरसण रो पूरो पूरो असर हो :

"गजबंध कमध्धां मंझळी, सिधां मज्झि गोरक्ख जिमं" । भीम सीसोदिया ताणी भी

"माया मोह प्रमुक्कियौ, इम खुम्माण नरिंद ।
जेम लखम्मण रामचंद, भरथर गोपीचंद ।।"

• • •

"औपिया सिलह पहरी अपार ।
किरि जांण सिध्ध, मिलिय केदार ।।"

• • •

"सोहियौ सिलह पहरी समाथ ।
अवधूत राय गोरक्ख नाथ ।।"

अेक जगां दिक्खणी सेना री उपमा लंका री माया रूपी राक्षसी सेना सूं दीनी है :

"दळ लंका दखणाधि, रूप माया राकस्सी"

रस

"गज गुण रूपक-बन्ध" मूळ रूप सूं अेक वीर काव्य है जिण में चरित्र नायक जोधपर नरेस गजसिंघ जी रा पराक्रम अर सूरबीरता रो परकास है । इण वास्तै ग्रंथ में आद हूं अंत ताणी वीर-रस ही छायोड़ो है । प्रबन्ध काव्य री दीठ हूं नवूं रसां रो निष्पादन जरूरी हुवै पण इण ग्रंथ में खाली वीर रस अर इण रा सहायक रस, श्रृंगार रौद्र, बीभत्स नै भयानक आद रो ही निष्पादन खास तौर सूं कीधो है । श्रृंगार रस रो वर्णन भी नाम मात्र रो ही है । न्यारा न्यारा रसां री व्याख्या अर रस सिद्धान्त री मीमांसां इण पोथी रो बिसै नीं है अर अणचाहिजतो बिस्तार करणों भी अभीष्ट कोनी, इण वास्तै प्रमुख रसां रा नमूना ही 'गुण रूपक' सूं पाठकां रीं जाणकारी खातर नीचै दिया जा रिया है :

वीर रस

गुण रूपक में बियां तो हर पृष्ठ पर वीररस ओत प्रोत है पण इण रस रो चरम उत्कर्ष राठौड़ गजसिंघ अर भीम सीसोदिया रा जुध बरणन में देखण नै मिळै :

"वीर रस्स वाधियौ, बीर लागा ब्रहमंडै ।
रांमायण भारथ्थ, कनां देवायण मंडै ।।
एरापत्त गजिन्द्र, फौज गैजूह गडाड़ां ।
तिकरि मेर परबत्त, मज्झि कुळ आठ पहाड़ां ।।
बन्दूक मार गोळा सरै, लागै पार न लौहड़ै ।
रिण खेत खुरम सुरतांण रौ, जटा-जूट कुंजर पड़ै ।।

• • •

सु संग्राम गजसिंघ, सीस गयणंगण लग्गै ।

वीज जिहीं वळकतै, खाग ग्रहिये ऊनग्गै ।।
जेम 'खेम' जैतसी, जोध विद्या खेलंतौ ।
गज थट्टां गाहतौ, साह फौजां फुरळंतौ ।।
वरियाम जणै जण वाजतौ, जोधपुरां जोधह पुरौ ।
वजरंग हुऔ हणवंत वरि, भलो भीम कल्याण रौ ।।

• • •

सीसोदां कमधजां, जुद्ध मातौ जोधारां ।
घाइ घोर अंधार, धमस धारां अंगारां ।।
पक्खरियौ है पड़ै, ढहै ढैंचाळ धैधंगर ।
जीण साळ ऊजड़ै, पड़ै सुहड़ा पंचाहर ।।
हैरांन हुआ हिन्दू तुरक, आया लौह न आडड़ै ।
गजगाह 'भींम' गाजी हुऔ, व्याहक लाडी लाडड़ै ।।

• • •

चीतोडौ चालणी, अंग हूऔ आरिब्बह ।
कुरव्व दळ अंतरै, जाण भीखम्म पितामह ।।
आरुहता भगदन्त, अस्सि रागां चाडंतौ ।
गैजूहां गौड़तौ, खग्ग भूबळि झाड़ंतौ ।।
भूडंड बधे ब्रह्मंड लग, धन्न पराकम सूर तन ।
पाडियौ जोध आउट्ठ मौ, दौढौ रावत कुंभक्रन ।।

• • •

रांमायण रांमचंद, वहै कुंभक्रन रांमण ।
हणमंत खौड़ो हुऔ, मरे जीवियौ लखंमण ।।
अरजण भारथ कियौ, लियण हथणापुर ढूकौ ।
जै दसरथ अहिवन्न, करम मारियो घडूकौ ।।
गजसिंघ कियौ गजगाहणौ, "भीम' मारि भग्गो खुरम ।
कमधज्ज पखै जीतो कमण, साजै नाद संग्राम द्रम ।।"

चरित्र नायक गजसिंघ रो बखांण पाठक री निजरां सामैं अेक उदात्त चितराम खींचै जिको वीरता री साकार प्रतिमूर्ति लागै :

"माझी मेर अभंग भड़, मारू अमली माण ।

गिळण गढां भूखाळुऔ, औ बासै जमरांण ।।

• • •

"ऊठियौ 'गजण' बरजागि आगि ।
जुड़िवा जड़ागि गयणागि लागि ।।
नीमझे भुज्ज नव सहस नाद ।
सादूळ सुणे किरि मेघ साद ।।१।।
बीरत्ति बिढेबा बिळकुळेय ।
मुख राग मूंछ भ्रूहां मिळेय ।।
चख लाल कीध मुख कीध चौळ ।
कळकळै तेज विकसै कपोल ।।२।।
त्रिस्सळौ तांण निल्लाट तांम ।
कमधज्ज करण संग्राम कांम ।।
ब्रह्मंड लगै भुजडंड वध्धि ।
महमहण मथण किरि महोदध्धि ।।३।।

• • •

मछरियौ राउ मारू मसन्द ।
रांमण सीस जिमि रामचंद ।।
गरजियौ विढम दूजौ 'गंगेव' ।
मारिबा त्रिपुर किरि महादेव ।।३।।"

इणी भांत साहिजादा खुर्रम रो बखांण भी अनोखो बण पड़ियौ है :

"खुरम्मं सुरत्तांण, घूणै खड़ग्गं ।
वधै वामणं वोमि जाणै विलग्गं ।।
बणै चौळ चक्खं, मुखं चौळ ब्रन्नं ।
ग्रहै जे वहौ घात, बाथां गिगन्नं ।।१।।
महाकाळ क्रोधन्नळं, क्रोध मन्ने ।
दुआदस्स आदीत, ऊगा वदन्ने ।।
भुजा डंड नीमज्ज, माझी भुजाळौ ।
किरै चम्पियौ, ऊफणैं नाग काळौ ।।२।।

• • •

नगारो हुऔ, भेरि नीसाण नद्दं ।
सरद्दं गरज्जै, करै मेघ सद्दं ।।
हळाबोळ है-थाट, हूए हमल्लं ।
आउल्ला असव्वार, तेजी अलल्लं ।।६।।"

भीम सीसोदिया रो हरावल में बखांण भी कम कोनी :

"'दूजां' ऊबरां, लोग लागै दुखाळो ।
कियौ आगळी, 'भीम' पाहाड़ काळो ।।

• • •

विढेवा वधे, दाखियो वीर रस्सं ।
'अरस्सी' हरौ, कूंत तोलै अरस्सं ।।
ओपै फौज मांहीं, अमर सिंघ तन्नं ।
फिरै जाण लंका, दळं कूंभ क्रन्नं ।।

• • •

तुरां तौरवै, मेलबा लौह तातौ ।
मरेबा तणी, होड रो कोड मातौ ।।
वरस्सीह वध्धावळै, आंक आडौ ।
लखै थाट जानी, हुऔ 'भीम' लाडौ ।।

• • •

कियां जाग जौड़ां, खड़ै पैज कावै ।
अड़ा भीड़ आकास, माथो अड़ावै ।।"

रौद्र रस

करमसेन माथै धावा रा बखांण में गजसिंघ रो रूप परळै काळ रै मेघां री भांत लखावै :

"डरै माड मेवाड़, वलौ पाहाड़ द्रबक्कै ।
आकंपै अरबद्द, सीस देवडां चमक्कै ।।
जडिजै गढां किमाड़, प्रज्ज भाजै परराठां ।
खळां खंड खळभळै, इळा दहलै दिस आठां ।।
फेरिया उलाक चिहुंवैं दिसी, हुई राजथांनां हटक ।
मेलिया 'गजण' मंडांवरै, करमसेन माथै कटक ।।"

• • •

रौद्र नै अधक परभावी बणावण वास्तै करमसेन रो रूप-दैन्य भी दरसणीक है :

"थळ जंगळ आरांन, जेथ गिर नहीं सरोवर ।
जळ पयाळ काइ गिगन, भोम उद्दाम भयंकर ।।
तेथ फिरै रड़वडे, थकित, हुऔ पंथ डूलौ ।
लांघणियो भूखियो, सीह किरि डाणां हूलौ ।।
साह बळ बडो बिहबळ हुवै, त्रिखावंत जळ मोकळै ।
कळिमूळ आइ पैठो 'कमौ', भुंइ कंठै भाखर वळै ।।"

रौद्र रस रो अेक और उदाहरण दिखणाद री सेना रा बखांण में देखबा लायक है :

"दक्खणवै दळ असंख, चिहूं पासै चतुरंगह ।
गड़डि नाळि गाडियां, बौल पडसंद निहंगह ।।
ढोल दमामां धुवै, हुवै है- थाट हमल्लै ।
धरणि धूज धमहमें, सपत पंयाळ दहल्लै ।।
खुरसाण लंक पत्ती खहण, खेध्र वेध वूहा खड़ग ।
पतिसाह दळां पाधर हुऔ, राड़ रोस मुर मास लग ।।"

भयानक रस

कवि जठै कठै भी काव्य में जुध रो परतख दिरस दिखावियो है उठै 'भयानक रस' रो सजीव चितराम कोरियो है । टौंस नदी रै किनारै राठौड़ गजसिंघ अर भीम सीसोदिया रै बीच जुध रीं भयानकता रो बखांण देखबा जोग है :

"हथनाळ हवाई हूकळंत ।
गजनाळां गोळा गड़िअडंत ।।
बळती ब्रजागि उड्डै बहन्त ।
आराबौ छुटौ आवरन्त ।।
गोळा वहत्त धूजंत गोम ।
धुब्बियौ गगण धड़हड़ै धोम ।।
आतस्स घोर मिळियो अंधार ।
रिण सोर जोर हुय रौद्रकार ।।

• • •

भारत्थ हाक वाजी भड़ांह ।
घैघूंब थाट लूंबै घडांह ।।
निहसिया जोध घाए नित्रीठ ।
रिण खळै रूक वाजियौ रीठ ।।

• • •

खूमांण जुडंतौ जैत-खंभ ।
थाटां बिच होळी हुऔ थंभ ।।
घड़हड़ै धरा ब्रहमंड घुबेय ।
है-थाट भीम माथै हुबेय ।।"

वीभत्स रस

जुध री मारकाट में लोही रा खाळ चालणा, पळचारी पंछियां अर पसुवां रो मांस भखणों, लासां रा ढेर, घायलां री हाय तौबा अर तड़फड़ाट । तरवारां री झीक में कटता मूंड अर धड़ सूं रुधिर री बरळकां पड़णी-अै सेंग वीभत्स रस रा अहनाण है :

"गळोवळ हेक चटा-वख गूंथ ।
लळावट हेक लुळै हुय लूंथ ।।
चळव्वळ हेक हुआ व्रन चौळ ।
धारां मुंहि हेक दिये धमरोळ ।।
रिणंगण हेकां आंत्र रुळंत ।
हसत्त दंतां हिक हींडुळ अंत्र ।।
लड़ै हिक लागै लौह सलोध ।
जमद्दढ टेक उठै हिक जोध ।।

• • •

खळहळै रत्त परनाळ खाळ ।
डोळियां पड़ै धड़ जूह डाळ ।।
करड़कै कंध संधांण घट्ट ।
फरड़कै फीफरां आळ फट्ट ।।

• • •

अन्नड़ां नड़ां अप्पड़ां अंत ।

फड़फड़ां जीव जाणै फुरंत ।।
छक्कड़ां कड़ां खड़खड़ां छूट ।
तूंबडां जिहीं सिर पड़ै तूट ।।"

श्रृंगार रस

करीब २४० पृष्ठां रा इत्ता बडा ग्रंथ रै मांय सिर्फ अेक जागां श्रृंगार रो बरणन मिळै । गजसिंघ जी जद जोधपर बिराजिया तिण बखत वां रै रणवास रो बखांण कवि कीधो है जिण में वां री राणियां री पिछाण करावतां प्रसंगवश ही वां रा रूप रो बखांण है ज्यो भी बिल्कुल मर्यादित अर शालीन है :

"चपळ नेत्र सारंग, रेख भ्रूंहां मकरंदह ।
दीपक नासा दिपत, सरद रैणी मुख इंद्रह ।।
दसण बीज दाड़म्म, वेणि-वासंग-भुयंगम ।
भटियाणी वर कमध, समद गंगनदि संगम ।।
'कलियाण' सधू मोटै कुळहि, सुवप महातम सुरसरी ।
इधकार सील इधकै बडै, जमळि कंत जैसळ गिरी ।।
लोयण चंचळ चपळ, अचळ ध्रू जिम मन धारण ।
कड़ि मयंद मुख इंदु, दीरघ वैणी अहि दारण ।।
मद गयंद गति मंद, काय जाणैं ग्रभ कद्दळि ।
वप चंपक दळ वरण, सीस गुंजार करै अळि ।।
सत्रसाल पढीजै वीरभद्र, प्रघट जाम है मह प्रथी ।
जोड़ै 'जसवंत' जाम ध्रू, जिसी गंग भागीरथी ।।"

श्रृंगार रा बखांण में भी कठैई विलास अथवा भोग लिप्सा री कोई गंध नीं मिळै । कुळ परंपरा री गरिमा अर पवित्रता री प्रतिमूर्तियां आं क्षत्री रमणियां रो महत्त्व गिणावतां कवि कहै :

"कुळ मोटै बहुवां कुळ ध्रुवां, मांन महातम निरब है ।
कण सूप जिंहीं औगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहै ।।"

• • •

"धिन कुळ बहुवां कुळधियां, जीनां एह जुगत्त ।
जिन्हां उद्दर ऊपजै, "अमरज" जेहा पुत्त ।।"

आं कुळ-बहुआं अर कुळ री बेटियां रो मोटो सनमान अर जस इण बात सूं है क आं री कूख सूं "अमर सिंघ" राठौड़ जिसा वीर नीपजै ।

गुण रूपक रा कुछ्छ रूपाळा अंश अर बीजी रचनावां

कविता, कामण अर धनुख रै बारै में अेक पुराणों दूहो परसिध है :

"की कामण की कवित रस, की धानुक्ख सरेण ।
लागां तन, लोयण, श्रवण, सीस न धुनिये जेम ।।"

अर्थात कांई कामणी (नारी) कांई कविता अर कांई धनख सूं छूटियो तीर आं तीनां री अधकाई आ है क अेक नै (नारी नै) देखतां ई, अेक नै (कविता नै) सुणतांई अर अेक (तीर) रै लागतांई जे माथो नीं धूणैं तो अै तीनूं ई कोई काम रा नीं ।

कवि कैड़ो भी रस-सिद्ध हो, रचना रो आखो कलेवर इकसार सरस अर रूपाळो नीं बणा सकै । रचना में जिका थळ मार्मिक हुवै अर जठै कवि आतम बिभोर होय आपरी अनूभूति नै आकार देवै काव्य रा बै हीज थळ मनमोहक अर रस सूं सराबोर होवै बाकी तो इतिवृत्त अर घटणा तथा वस्तु रा बखांण मात्तर तांणी आपरी सींब राखै । रूपक-बन्ध रा कुछ इसा ही टाळवां थळ जिकां में कवि रो शिल्प मूंडै बोलतो लागै नीचै दिया जा रिया हैं जां नै पढ़/सुणर पाठक/श्रोता बरबस ही "वाह, वाह" कहसी :

जोधपर नरेस सूरसिंह जी साह्री फौज रै सागै दिक्खण में गया तो राज प्रबन्ध रो सारो भार राजकंवार गजसिंघ रै कांधां पर ही पड़ियो । गजसिंघ जी इण समै छोटा थका ही हा । वांरी किसोर अवस्था में ही राज रो भार संभाळण री खमता रो केसोदास इण अेक दूहा में बखांण कीधो है :

"धमळौ बापू धारियौ, बाळो है बळिवंड ।
धुरि माथो धूणै नहीं, भरिओड़ै भूडंड ।।"

डिंगळ काव्य परम्परा में वीर पुरस री सहनसीलता अर भार

उठावण री खमता री तुलना बळद (धवळ) सूं करी जावै । इण दूहै में गज सिंघ जी नै "बाळक धवळा" रो रूप दीधो है, ज्यो भोत बळवान है आपरै पिता री धुर (जूड़ै) नै धारण कीधी है । कतरो ही बोझ हो ओड़ै में ओ माथो नीं धूणैं (बोझ खींचण में इनकारी नंह करै)

गजसिंघ जी सिरोही पर चढाई करी उण टेम रो बखांण :

"मछरीकां सिर मछरियौ, राइजादौ राठौड़ ।
वैर पुराणा वाळिबा, करै नवल्ली दौड़ ।।१।।
'गजबन्धी' दळ मेल्हिया, पहरे जोध जरद्द ।
मारि मनाऊं देवड़ा., हव गंजूं अरवद्द ।।२।।"

सिरोही रा राव सुरतांण रायसिंह जी नै मारिया हा जिण रो बैर काढणा कंवर गजसिंघ आपरा पिता महाराजा सूर सिंघ जी रा दिखण परवास रै वखत सिरोही माथै हमलो कर जुध जीतियौ अर देवड़ां नै हराविया ।

जहांगीर साह राठौड़ां री बधती ताकत सूं भै भीत होय आं रै बीच फूट गेरण री चाल सोची । अेकर गजसिंघ जी री मोजूदगी में ही किसन सिंघ नै बहकाय र भाटी गोइंद दास नै मारबा खातर उकसावियो । गजसिंव जी इण बात नै बरदास्त नीं कर सकिया अर दरबार में ही तरवार स्यूंत र कही "भाटीं माथै हाथ रालै उण रो काळ पैली आसी ।"

"गजबन्धी' इम आखियौ, करि धूणे किरमाळ ।
'गोइंद' माथै आवसी, त्यां सिर आयौ काळ ।।"

बादसाह उण वखत तो चुप रियो पण थोड़ा दिनां पछै ही किसन सिंघ अेक रात गोइन्द दास रा मुकाम पर हमलो करियौ जिण मे भाटी वीरता सूं जूझियो अर कई आदमियां नै मार वीरगत नै प्रापत वियौ । महाराज सूरसिंघ जी रो डेरो भी नजीक हो वै भी रोळो सुणर हाथ में तरवार लेय गोइन्द दास रै डेरै पूगा पण इण पैली ही भाटी खेत रियो अर किसन सिंघ आपरा साथियां समेत भागग्यो । गजसिंघ जी भी इणी बखत आय पूगा । दो नूं बाप बेटां रो क्रोधित अवस्था में कवि द्वारा कियोडो बखांण किसो मनमोहक है :

"बळ दाखवि बेली बापूकारे, ऊभा रोस उभांखरिया ।
दळनायक बेटो बाप दुसासण, बै वै वासंग बज्जरिया ।।"
दोनूं बीर रोस में (क्रोध मे) ऊभा इसा दीसैं जाणै दोय वासिक नाग फण फैलायां खड़ा हैं ।

दिक्खण में गजसिंघ जी रा जुधां रो बखांण करतां कवि वांरी दिनचर्या रो कैड़ो ओपतो रूप दिखावियो है :

"नित्त जुद्ध मंडिजै, नित्त सिलंहा पहरीजै ।
नित्त तंग ताणिजै, नित्त केकाण कसीजै ।।
नित्त खडग्गा खड़खड़ै, नित्त पळचरां ध्रवीजै ।
नित्त जोध निहसंति, नित्त गजदळ गाहीजै ।।
नित हुवा प्रवाड़ा नव नवा, नित राखईजै अच्चड़ां ।"
राठौड़ रिमां जड़ धोइबा, धारां धोवै धजवड़ां ।।

जुद्ध-करम कितरा सहज भाव सूं दिन चर्या रो अंग हो आ बात इण बखांण सूं समझ में आवै ।

दिक्खण में खिड़की गढ नै ध्वस्त कियां पछै ध्वस्त नगर रो बखांण खण्डहर रो सागे चितरांम आंखियां सामों खींच देवै :

"जेथि दीप दीपता, तेथि प्रजळै हूतासण ।
जेथि हसति गूंजता, तेथि गुंजै पंचाइण ।।
जेथि रंग आंमास, तेथि क्रीडंति कुरंगह ।
जेथि त्रपति वैसता, तेथि उड्डंति विहंगह ।।
त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भुअण तेथि भरिया भसम ।
खेड़पति कीध खिड़की-तखत, वसुह रीत विपरीत इम ।।"

दिक्खणी फौजां रा पराभव रै बाद जद मलिक अम्बर री अगुवाई में दिखण्णाद री सेनावां साही फौजां सूं सन्धि कर कै बादसाह री आधीनता स्वीकार कीधी, कवि धरती रा सुभाव रो अर इण नै भोगणै री योग्यता किण में हुवै इण रो चित्ताकर्षक बखांण इण छप्पय में कीधो है :

"मार सार मारकां, इळा हूवै आपाणी ।
मुहि खग्गां, है खुरां, जेह रक्खी ते माणी ।।
वर केता बोळिया, कळह केताइ कुनारी ।

पुरख न परणी किणिहिं, आद जुग्गाद कंवारी ।।
गढ लियण कोट मैवंट्ट में, कमध दिखण **मथियौ कळी** ।
महितैं मार मनावि इम, खेड़ेचा राउ खग **बळी** ।।"

तरवारां सूं मर मार कीधां धरती आपणी **हुवै पछै** इण नै असिधारां 'र घोड़ां रा खुरां नीचै राखै वै इण रो **उपभोग** करै । आ कुनारी तो कतराई वर कर कर नै छोड दिया **अर** कितरा ही कळेस कराविया फेर भी कोई अेक पुरस इण नै नहीं परण सकियो । आ तो आद जुगाद सूं कंवारी है । हे **राठौड़** बीर खेड़ेचा तूं दिक्खण नै मथ कर घणां गढां पडकोटां नै मेट मार मार नै इण नै (धरती) मनावी है (आधीन कीधी है) क्यूं कै थारी **तरवार** में बळ है ।

हाजीपुर रै खेत गजसिंघ जी अर भीम सीसोदिया रै बीच हुवा संग्राम में केई नुई अर अनोखी उक्तियां कवि काम में लीन्हीं है । खागां री झाट सूं कटता सीस, सोटा दड़ी रा ख्याल में दड़ां री भांत दूर जाय जाय पड़ रिया हैं । संग्राम में खगां री वाढ में सरीरां सूं मांस रा लोथ इण तरह ऊछळ रिया है जियां क ऊंखळ सूं ओखणीजता चावळ ऊछळता हुवैं । तरवारां रा प्रहार सूं हाथियां रा सिर **इण तरै कटै** जाणैं तांत सूं साबण रा टुकड़ा कटता हो वैं :

"उडै खग चोट घड़ां सूं अंत ।
भड़ां चा सीस दड़ां ची भंत ।।

• • •

संग्राम खड़ग वाहंत सनड्ड ।
वपै पळ तंडळ ऊखळ वड्ड ।।
वढै जरदंत जड़ाळ वहंति ।
तुटंत गडा किरि साबिण तंति ।।"

खुर्रम रा विद्रोह सूं जहांगीर घणों दुखी हो हालांक बिजै साही फौजां री हुई पण घर री फूट रो दुख साह रा मन में घणों साल तो । कवि रा सबदां में :

"घर फूटौ घर कारणै, घर में लग्गी लाहि ।
जे जीतौ तो हारियौं, दिल्ली वै पतिसाहि ।।"

पण पराक्रमी वीर पुरसां रा मन में अेक भांत रो उन्माद रहै जिण सूं नाग री भांत क्रोध करै, त्रियां री भांत रढ करै अर हमीर री भांत हठ करै :

"सत्त पराक्रम सूरमां, मन्न हुवै उदमाद ।
रोस फुणिंदां रढ़त्रियां, हम्मीरां हठवाद ।।"

सेना रा कूच रा बखांण में कतार बांध 'र चालती फौज री उत्प्रेक्षा काती रा मीना में आकास में उडती कुरजां (कूंझ पक्षी) सूं करी है जो अेक नुई उकती लागै :

"लारो लार कतारां हल्ली, काती जाण कुरज्झांचल्ली"

जुद्ध में हाथियां रो बखांण भोत ही सजीव अर रोम खड़ा करबा वाळो है :

"मन्द मन्दोमता व्रक्ख धक्का मुड़ै ।
गाजता मेघ पाहाड़ काळा गुड़ै ।।

• • •

आंकुसां गज्ज कूंभाथळां ऊजळी ।
बादळी सीस जाणैं खिमैं बीजळी ।।
लाइयां लंगरां पेखि पट्टा झरां ।
डील भोळौ पड़ै कुंजरां डूंगरां ।।

• • •

वोम लागा वहै तोड़ता वारणूं ।
हल्लवै द्रोण ऊपाड़ जाणैं हणूं ।।"

• • •

गज सिंघ जी रै दिल्ली आगमन पर जहांगीर साह ऊठ 'र सामों आय गळै मिळियो अर गद्‌गद होय वांरी प्रसंसा कीधी :

"तूं भासंकर भाळियळ, बरै घड़ा अणबोट ।
भागा जो बड भाखरां, डर हुंदा सीकोट• ।।

• • •

हाजर हिंदूवै तुरक, लियै न पर भुंइ लोंड़ि ।
चींत बटावण हेक तू, बीत बटावण कोड़ि ।।"

५. बीजी रचनावां

"नीसाणीं विवेक-वार" अर "गजगुण रूपक-बन्ध" पर लारळा पानां में बिस्तार सूं विचार करियो गयो है । गाडण केसोदास री बीजी रचनावां में फुटकर गीत, कवित्त छन्द आद बडी तादाद में मिळै । कुछ गीतां री बानगी परिशिष्टि "ख" में उद्धृत है । गीतां मांय सूं घणकरा अप्रकाशित हैं । अै गीत अर दूहा राजकीय अभिलेखागार, बीकानेर सूं मिळिया थका हैं । राव अमर सिंघ रा दूहां मांय तथा गीतां मांय नागोर रा राठौड़ लोक वीर अमर सिंघ री वीरता रो बखांण है । राव अमर सिंघ साही फौज बख्शी सलावत खान नै भरे दरबार में अपशब्द बोलणैं पर कटारी रा अेक ही वार सूं मारियो हो । पछै साही फौज रा सैनिकां सूं अेकलो ही मुकाबलो करतो काम आयो ।

दूहां में दो चार दूहा तो बिलकुल नई उद्‌भावना लियां थका हैं :

अेक दूहै में अमरसिंघ री कटारी नै सूरज री किरण बताई है अर अमर सिंघ नै सूरज ज्यो सिंझा रै समै ऊगो है । ई सूं इण घटणां रो बखत सिंझा रो साबित हुवै –

"असुरां फाड़े ऊर, कट्टारी प्रगटी किरण ।
सूर कळोधर सूर, ऊगो आंथमियां समै ।।"

दूजा अेक दूहा में अमर सिंघ रै तरवारां रा घावां सूं लोही सूं भीजण री अवस्था रो होळी खेलतां (फागण मे) गुलाल रा

• सीकोट—अेक भांत की मृगमरीचिका

लाल रंग में रंग जावण सूं उतप्रेक्षा कीधी है जकी घणी जीवंत है :

"लोही हूवा लाल, घण घाये घूमे घड़ा ।
गजसिंघोत गुलाल, फागण फाग क खेलियो ।।"

अेक और दूहा में जुध री समता डांडिया गेहर सूं कीधी है अर तरवारां री चमक सूं अंधेरी रात में चांद रै उदय सूं चानणों होवण री उत्प्रेक्षा है :

"भारथ गेहर भात, डांडेहड़ उठियौ दहम्म ।
कीयौ काळी रात, चंद्र प्रहासे चानणै ।।"

गीत

गाडण केसोदास रा रचियोड़ा घणां गीत लोप होग्या, मिळै कोनी । बानगी रा तौर पर परिशिष्टिं "ख" में १३ गीत दिया है ।

गीत संख्या १ में कवि गजसिंघ जी री बीरता रा सबद चितराम बणाबा में अपणैं आप नै असमरथ पावै क्यूंक इण बीर खेड़ेचा* रो खड़ग तो आकास में चितराम कोरै :

"चूंडाहरा आकास चित्रणौ, खेड़ेचा ताहरो खग"
(चूंडाहरा-चूंडा का वंशज)

गीत संख्या २ सूं ५ ताणी नागौर रा राव अमर सिंघ री अनोखी बीरता रा बखांण में कहिया हैं । अमर सिंघ साहजहां रा दरबार में फौज बख्शी सलावत खां नै कुछ अपशब्द बोलबा पर कटारी रा अेक ही वार सूं ढेर करियो हौ जिण रै बाद केई जणां उण नै दरबार में घेरियो पण बो आपरी कटारी रा वार सूं केइयां नै जमलोक भेजिया अन्त में अरजन गौड़ री तरवार रा वार सूं बीरगत नै प्रापत हुऔ । बीरता रा इण बखांण में इण जुध नै केसोदास "अद्वितीय" बताबियो है :

"कोटां ओट घणां जुध कीया, फौजां घणां किया पग फेर ।

---

* खेड गांव सूं ऊठिया थका ।

राउ राठौड़ जिही सूं रौद्रां, अधपत बिढियो न को अनेर ।।"

अमरसिघ रा इण अचाणक हमला सूं बादसाह खुद कांप ऊठियो । अमर सिंघ री कटारी बज्राग री भांत चमकी जाणै बीजळी माथै बीजळी पड़ी हुवै ।

"हुय है कम्प कांपियौ हजरति, लागुआं पैर नीसरी लाग ।
वहमंड 'अमर' भुजाडंड वहती, वाढाळी झळहळी व्रजाग ।।
असपति राव चमकि औद्रकियौ, खेड़ेचै वाही कर खीज ।
सुकरि अकास हूंत सेलारां, वीजुळ विढण क वुही वीज ।।"

गीत संख्या ६ सूं ८ ताणी रा बलूजी चांपावत (बलभद्र) हरसोळाव री बीरता रै बखांण अर वां रै दाह संस्कार बाबत हैं । सरू में बलू चांपावत राव अमर सिंह कनै हो अर वांरी दियोड़ी जागीर भोगतो पण दोनूं ही आंटीला अर क्रोधी सुभाव रा हा जिण सूं अणबण व्हेगी अर बलू जी मेवाड़ महाराणा री सेवा में आयग्या । उठै भी वां री पटड़ी नीं बैठी अर अन्त रै दाय वादसाह री सेवा में आयग्या जठै वां नै मनसब अर जागीर रो पट्टो मिळियो । राव अमर सिंह रै आगरा रै किलै में काम आयां पछै राठौड़ा में घणीं उत्तेजणा फैली अर बलू जी चांपावत अर भाऊसिंघ रा नेतृत्व में राठौड़ां अरजन गौड़ नै मार नै अमर सिंघ रो बदलो मोड़ण रो संकळप कीधो । साह, राठौड़ा नै समझावण री कोसीस कीधी पण बलूजी बादसाह रो दियोड़ो पट्टो उण नै लोटाय दीधो अर जुध रो संकळप दुसरावियो । गीत संख्या ८ में इण घटणां रो सागे बखांण है :

"अम्हें तो अमर राजा तणा ऊमरा, जुड़ेबा पार की छठी जागां ।
बोलियो बलू पतसाह रै बराबर, मारवै-राव रो बैर मांगां ।।

• • •

गीत संख्या ७ में साही पट्टो लोटावण रो उल्लेख है :

"मरण दिन पटो परहरि नवो मोड बांधि,
मुऔ जूना पटा साथि मारू ।"

गीत संख्या ६ में बलूजी रा अन्तिम संसकार रो बखाण घणों कवित्त पूर्ण अर बीतराग संजुत बीर रस रो रूपाळो नमूनों है :

"धड़ लाकड़ हुवै बळै हंस धूआं,
झाळ हुवौ रणताळ झलू ।
बळगौ खाग अभाग बैरियां.
बळती आग बज्राग बलू ।।

• • •

हाथां मछर केवांण हूविया,
सुरतांणा माथै यर सूळ ।
असुरां थाट काट आवटियौ,
मंगळ झळ ठरियौ कळमूळ ।।"

ज्यो बलू जुध में ज्वाळा रै समान हो उणरो धड़ लकड़ी री दांयी बळै अर प्रांण धुआं री भांत उड गिया । बो बैरियां रो दुर भाग बळती आग में बळग्यो । सत्रवां रै वास्तै बो बज्राग्नि माफक हो । वो आपरै हाथां सुरताणां रै सीस तरवार बजाई अर असुरां (जवणांरा) रा झुंडां नै काटतो थको जुध रो मूळ जुध रा मंगळ (ज्वाळा) में ही ठरियो (ढंडो वियो) ।

बलू जी चांपावत पर केसोदास रो कहियो "गजगत" गीत राजस्थानी काव्य में घणो परसिध है इण में बलूजी नै बींद अर साही फौज ने बींदणी रो रूप देय र बियाव रा सेंग क्रिया कळापां, नेग चारां रो साङ्ग रूपक बांधियो है ज्यो घणों मन भावणों है । बो गीत काफी बडो है इण वास्तै बिस्तार भय सूं इण पोथी में नीं दियो जा सकियो है ।

गीत संख्या १३ में रावळ तेज सिंघ महवेचै रो भी साङ्ग रूपक गोरख नाथ जी सूं बांधियो है जिण में राजा अर साधू रा सैंग साज सामान रा रूपग थरपिया हैं अर फौज नै साधुवां री जमात रो रूप दरसायो है ।

ऊपर जकी रचना रो जिकर कियो गयो है वां रै अलावा अेक और रचना "छन्द नागोर अमर सिंघ जी रा, केसोदास गाडण कृत" रो पतो लागियो है (पुस्तक संख्या ४४) ज्यो बुधजी आसिया गांव भांडिया वास रा संग्रै में है । ग्रन्थ रा आकार अर काव्य री बानगी रा अवलोकण रै पछै ही ठा पड़सी ।

छन्द महादेव जी रा :	छोटो सो ३३ छंदां रो सुन्दर ग्रंथ है जिण में कवि भगवान शिव रा रूप नै बखांणतां वां री विनती कीधी है । श्री सौभाग्य सिंह शेखावत रा लेख "केशवदास नामक दो चारण कवि" शीर्षक सूं 'वरदा' वर्ष ८ अंक ३ जुलाई १९६५ में छप चुकियो है । रचना कवि री शिव भगती री बोधक है अर काव्य री दीठ हूं ओपती ।
गोरख नाथ जी रा छन्द	अै ग्रंथ (अप्रकासित)
राम सिंघ करमसेणोत रा कवित्त	अनूप संस्कृत लाइब्रेरी
राजा गजसिंघ जी रा कवित्त	बीकानेर रा ग्रंथ सूचीपत्र (कैटलाग) में तो दिखाविया है पण लाइब्रेरी में जिण बस्तै में होवणा चाहि जै उण में नीं मिळिया ।

अेक बात ज्यो सब सूं अचम्भा री है वा आ है क केसोदास रा फुटकर गीतां, कवित्तां अथवा छन्दां या दूहां में अेक भी ईश्वर संबंधी रचणा देखणैं, सुणणैं में नीं आई । आ बात तो समझ में आवै कोनी क अतरो समरथ कवि अर वो भी विरक्त अर हर भगत कोई फुटकर रचणा आपरां इस्ट देव पर नीं कीधी हुवै । अन्दाजो ओ लागै क गाडण केसोदास रो बहोत सो साहित अलोप होइग्यो ।

अध्याय 4

गाडण केसोदास री भारतीय वाङ्मय नै देण

कवि आपरा जुग, आपरा समाज, उण समाज री संस्कृति, इतिहास, अर देस री अवस्था रो प्रतिनिधि हुवै । उण री रचनावां उण देस, काळ अर दसा रो प्रतिबिम्ब हुवै जिण में वो जीवै, जागै अर अनुभव करै । गाडण केसोदास सोळवीं सदी रा उत्तरार्ध अर सत्रवीं सदी रा पूर्वार्ध में बिराजमान हा । दिल्ली में बादसाह जहांगीर अर कुछ काळ ताणी साहजहां रो सासन वां देखियो । जोधपर में महाराजा सूरसिंघ जी अर पछै गजसिंघ जी रा राजकाळ में बै बिराजिया । अकबर बादसाह रा काळ री सुव्यवस्था अर सान्ति तो इण काळ में हालगी ही । जागां जागां, कांई तो दिक्खण कांई उत्तर मुगळ सत्ता रै प्रति विद्रोह रो बिगुल बाजण लागियो हो जिण रा दमन रै वास्तै साही फौजां रो बडो भाग तैनात राखणों पड़ियो । केसोदास रा "गज गुण रूपक-बन्ध" सूं उण काळ री अर समाज री अवस्था रो खाको निजरां सामों परतख दरसी जै । कवी रा इण ग्रंथ सूं तथा बीजी रचनांवां सूं परगट हुवै क भारत री जनता (हिन्दू) मुगळ सासण नै सहज भाव सूं अंगेज लीधो हो अर समाज रा स्तर माथै हिन्दू, मुसळमान रो भेद नांव मात्तर रो सो हो । धार्मिक बिद्वेस रो भाव बहोत कम हो, साम्प्रदायिकता री नफरत भी नीं ही । हां! आगै चालर औरंगजेब रा जुग में हिन्दुवां माथै ज्यादतियां रो जको दौर चालियो उण सूं सामप्रदायिकता रो दानव मूंडो फाड़ियो, नफरत रो बिख जन जीवन में फैलियो । इण धार्मिक समझबूझ री थिती लावण में उण काळ रा कवियां अर हरि भगतां

रो मोटो सहजोग हो । गुण रूपक में अेक जागां बादसाह जहांगीर री फौज रा पड़ाव अर उणरी सोभा रो बखाण करतां साह रो जिको सरूप चितराम अेक 'काइब' में कवि खींचियो है बौ देखण जोग है :

'काइब'

"सिंघासणो वा इनद्रासणो वा, प्रथीपती वा सरगापतीवा ।
भ्रितं सुरोवा भ्रितं नरो वा, दिली सरौ वा जगदीसरौ वा ।।"

इण सूं परगट हुवै क जन मानस में 'दिल्लीसर' अर 'जगदीसर' में कोई भेद कोनी हो ।

उण काळ रा चारण कवियां री जकी परंपरा रई है उण सूं साम्प्रदायिकता री गंध कठैई नीं आवै । जुद्ध रा बखांण में कांई वीरता रा गुणगान में जिका जीवन भोल दरसाविया हैं वां री प्रासंगिकता बियां री बियां बणी थकी है ज्यो आज रा बखत में भी जरूरी है । समै रै साथ खाली थितियां अर साज सामान री जरूरतां ही बदलीजी हैं । सास्वत मोलां री गरिमा न तो आज घटी है अर नंह ही आगै घटैला ।

केसोदास री वीरता परक रचनावां में जिको भव्य अर ओजस्वी रूप चरित नायकां रो दरसीजै वो भारतीय साहित रा गौरव अर गरिमा रो उदात्त चित्राम है । जिका लोक-आदर्श वां थरपिया वै धरती रा धरम अर लोकहित सूं जुड़िया थका हा । बादसाह रो गोइन्द दास भाटी नै मारबा खातर केसरी सिंघ नै उकसावो अेक राजनीतिक चाल ही । साह राठौडां री बधती ताकत सूं ससंक हो अर राठौडां में फूट राळर वांनै कमजोर करवा रा गुप्त मन्तव्य सूं ही बो केसरी सिंघ नै उकसावियो । केसरी सिंघ भी इण बात नै समझतो हो पण सामध्ररमू छत्रियां ताणी और सेंग धरमां सूं बिसेस होवै इण वास्तै केसरी सिंह आपरी परगै सूं रायलीधी ज्यो कही क राठौडां सूं मत झूझौ । पण आपरी साम धरमी रै कारण बीं कही :

"केहर कहियौ सांभळौ, ए खत्रीपण राह ।
बोल न जाये सूरिमां, काया जाइत जाह ।।"

सूरबीरां रा बचन नीं जाणां चावै काया जाय तो भलांई जाय ।

वचन निभावण री परंपरा राजस्थानी वीरता री निरवाळी पिछाण है । इण रै खातर जाणै कतरा राजस्थानी क्षत्री बीरां आपरा प्राण त्रिण माफक होमियां हैं? आ काव्य परंपरा भी जूना कवियां सूं चालती आई है । गाडण पसाइत, चानण खिडियों, ईसरदास बारहठ आदि सूं चालर गाडण केसोदास अर उण रै भी पछै घणैकाळ ताणी परंपरा रो निरबाह रियो है ।

जदपि गाडण केसोदास परंपरा रो निरबाह कीधो है पण आपरा पैलड़ा कवियां री भाव छाया आपरी रचनावां में कठैई नीं आवण दी । ज्यो भी उक्तियां अर जका भी भाव गाडण री रचनावां में देखण नै मिळै परंपरागत होतां थकां भी वां रा आपणा है, मौलिक है । कविराजा बाकी दास अर महाकवि मीसण सूरजमल जिसा कवि भी ईसरदास जी रा कुंडळियां रा भाव आपरी रचणावां में ज्यूं रा त्यूं काम में लीधा है पण केसोदास कठै भी ओ प्रयास नीं कीधो । वीरता रा सिद्धांत बतावण री ठौड़ वै बीरता रो सांगोपांग चितराम ही उकेरियो है । केसोदास रो अमर सिंघ ओछा बोल माथै कटारी ही बाही है, बडा बोलां सूं बीरता कोनी बघारी । बो तो लोही सूं लाल होय फाग री गुलाल खेली है उण नै "चंदनामा" री फिकर काय नीं । उण री वीरता तो अनोखी है अप्रतिम है :

"अेक कटारी कियौ न अेकण,
गजसिंघोत जिसो गजगाह"

इणींज भांत बलूजी चांपावत साह रो पट्टो फेंक अमर सिंघ रा जीवन में उण सूं मनमुटाव होतां थकां भी उणरो बैर काढण वास्तै साह री फौज सूं जुध कर नै वीर गति पाई ।

"बोलियो बलू पतसाह रै बराबर,
मारवै-राव रौ बैर मांगां"

* * *

"बळगौ खाग अभाग बैरियां,
बळती आग ब्रजाग "बळू" ।"

* * *

बीरता रा इसा प्रतिमान राजस्थान री इण धरती रा गौरव भरिया वै सुनैरा आखर हैं जकरा जुंगां सूं इतिहास रा पानां में दीपता रिया हैं अर अनाद काळ ताणी ही दीपता रहसी ।

केसोदास री भगती भाव अर बैराग परक रचनावां में नाथ समप्रदाय रो असर मोटा तौर पर लाधै । "नींसाणी विवेक—वार" अर "महादेवजी रा छन्द" में दरसण रा तत्त्वां रै सागै सागै भगती भाव रो समन्वय वां री आध्यात्मिक भोमका रो सागी दरसण करावै । वै किणी खास हठ अथवा आग्रह रो पल्लो नीं पकड़'र मिनख मात्तर री भलाई रो, उणरी आत्मिक उन्नति रो मारग दिखावै । इण में किणी धरम, करम रो कोई भेद भाव नीं दरसावै । सेंग धरमां री अच्छाइयां रो समन्वित ग्यान वां री रचनावां रो सार है ज्यो साम्प्रदायिक भेद भाव सूं दूर मिनख रै आतम-हित रो मूळ मन्तर है । वां रै वास्तै राम, रहीम, ईस्वर, अल्ला सब अेक हैं । सगुण, निरगुण, उपासना, ध्यान वेद, पुराण, कुराण, कतेब, आगम, निगम सब रो सार बो अलख निरंजण है :

"अलख निरंजण अेक तू बड्डा रहमाणं"

केसोदास रो सनेसो ओ है कै ईस्वर, अल्ला अेक है ज्यो विराट् रूप है, मुहम्मद साह, मुस्तफा सब बीं रा बन्दा हैं जो बीं री नमाज में झुकै । बोही अेक पूरण सत्य है— बाकी सब मिथ्या है :

"दुनियां बाद बिबाद, दुःख, सुख कुच्छ न कांई
झूठा माया जाळ है, सच्चा इक सांई"

सदाचार अर सचाई केसोदास रा सामाजिक मोलां री कसोटी है । संसार सूं बिरक्ति अर परमात्मा सूं अनुरक्ति ही ग्यान रो सार है । सूधा-भाव सूं समरपण अर भगती रै अलावा इन्द्रियां रो निग्रह अर मन रो मन्थण भी घणो जरूरी है । इण वास्तै मिनख नैं सब स्वादां (रसां) सूं ऊपर ऊठणों पड़ै अर ध्रुव धीरज धारणों पड़ै पछै अपणैं आप सूं जूझणों पडै फेर भी सतगुर रा दिया ग्यान सूं ही सांसो (संसय) मिट सकै :

"सब दौडन्दे स्वाद कूं, क्या कुल्लित पग्गा ।
ध्रू करि धीरज ना धरै, सो भूखा नग्गा ।।

• • •

देही हंदा देखिये, परपंच प्रसंगा ।
जीतै कोई सूरिमा, मनवा मातंगा ।।

• • •

आपण झूजै आप सूं, गह ग्यान खडंगा ।
जुद्ध करंदा रातदीह, कोई रावत चंगा ।।

• • •

बाहर का सूं झूझिये, घर झोड़ विलग्गा ।
सतगुर दीता निज सबद, तब सांसा भग्गा ।।"

सदाचार अर संतोख री महिमा गावतां केसोदास दान री बडाई अर बुराई रा त्याग माथै जोर देतां कह्यो है—

"रिजक सदक नित बांटणां, तिण थी निसतरंणा ।
फखर दियंतां ही भला, मक्कर परिहरणां ।।

• • •

चोरी, जारी, मुखवरी, बद्दी बीसरणां ।
सत, संतोख, ग्यान, मोख, नेकी आदरणां ।।

• • •

साई हन्दी सिर रजा, चित साहिब चरणां ।
ओट उसी दी तक्किये, उस ही दा सरणां ।।"

उण सांई री रजा सिर माथै राखो अर उण रा चरणां में चित लगावो । उणरी ओट लो अर उण रो ही सरणों गहो क्यूंकै "जेता जाया जीव हैं, ते आखर मरणां" ।

इण भांत केसोदास आं नीसाणियां में जको तत्त्व-चिंतण अर दरसण रो सार सरळ रूप सूं समझावियो है अर बिचार मन्थण करनै जको लूणियूं (नवनीत) संचियो है वो भारतीय वाङ्मय री आतमा नै अणन्त काळ ताणी स्निग्ध अर सचिक्कण राखसी तथा अमर तिरपती रो बोध देवतो रहसी । अै २९ नीसाणियां नहीं अै तत्त्व दरसण रा २९ सोपान हैं जिण माथै चढ नै साधारण सूं साधारण मिनख भी आतम परकास रो आभास पातो रहसी ।।

परिशिष्ट—क

(गाडण केसोदास विरचित "नीसाणी-विवेक वार" सूं टाळवां नीसाणियां, नमूना बतौर)

(१)

ऊँकार अरूप रूप निरगुण निरवाणं
नाथ निरंजण निराकार प्राण हंदा प्राणं
मनसा देवी दूसरी सिव सगति समाणं
धरणि पसारी अेकड़ा अरघें[१] आपाणं[२]
त्रिभवण ब्रह्मंड येक बीस मंडे मंडाणं[३]
दस दिगपाळ सिरज्जिया जम्मीं असमाणं
पवण पाणी मेर मेखळा[४] ससिहर[५] भाणं
अष्टकुळी परबत अनळ सातूं महाराणं[६]
छप्पन कोड़ी मेघमाळ उडियण[७] आथाणं
नव निधि नव ग्रह नवे नाथ छत्रीस जुगाणं
चौरासी लख च्यार खाणि परठे परमाणं
जम्मीं जेते कोटवाळ जे रै[८] जमरांण[९]
ब्रह्मा बिसन महेस सेस बंदे फुरमाणं
नागां देवां माणवां दैता भी आणं[१०]
भांजण[११] घडण[१२] गुसाइयां क्या लग्गै हाणं
रंक करै सुलितान कूं रंकां सुलताणं
मुसकल में आसाण है मुसकल आसाणं
जळ नदियां थळवट[१३] करै थळवट नीवांण[१४]

---

१. जल २. बनाया, उत्पन्न किया ३. चित्रित, दृष्य ४. पृथ्वी, करघनी ५. चांद ६. समुद्र ७. तारे ८. जिसके,अधीन ९. यमराज १०. और अन्य ११. तोड़ना, फोड़ना १२. घड़ना १३. भूमि, रैगिस्तान १४. कूआ

वडां वडेरा बड बडा बड्डा दीवाणं
अगम कहंदा निगम च्यार कत्तेब कुराणं
सुन्नि मंडळ बिच परम सुन्नि अणहद नीसाणं [15]
सहजै मिळै ज सतगरू खरतर[16] खुरसाणं
सबद बतावै हेकड़ा तब होय कल्याणं
पूरां सूरां पाइयां पूरा पुजवाणं
कुदरत्ती करतार दी कायम[17] कुरबाणं
तोरी किणहिन ताणवी करड़ी कब्बाणं
कहि कहि थाका सेसनाग बेहद्द बखाणं
तूझ बडाई बरणंवू हूं[18] केहा जाणं
केसव अक्खै [19] गल्ल सो सांई सुभियांण[20]
अलख निरंजण अेक तू वड्डा रहमाण[21]

(३)

ऊंचा बोह[1] असमाण[2] थी पायाळ[3] थी ऊंडा[4]
जम्मी[5] थी चौड़ा अधक मेर[6] हि थी वड्डा
पाणी ही थी पातळा परमाण पचंडा[8]
धूवैं ही थी झीवणा[9] कुछ प्राण न पिंडा[10]
बाकी हळवा वाव[11] थी बहळा[12] बळविंडा[13]
हद ही थी बेहद अपार रोम रोमां ब्रहमंडा
थावर जंगम सुखम थूळ[14] छीदा[15] भी जड्डा[16]
लंबा पहुळा[17] भी अलाह ऊभा[18] भी अड्डा[19]
जोगी आद जुगाद दा दीहां दा डड्डा [20]

---

१५. निसाण, बाद्ययंत्र १६. तीव्र, कठोर 17. निश्चित १८. मैं १९. कहता है २०. सुभान (ईश्वर के लिए प्रयुक्त शब्द) २१. कृपालुं, दयालु १. बहुत २. आकाश से ३. पाताल ४. गहरा ५. पृथ्वी ६. पर्वत ७. पतला ८. परिमाण में प्रचण्ड ९. झीना, पारदर्शी १०. शरीर ११. वायु से १२. बहुल १३. बलशाली १४. स्थूल १५. दूर-दूर १६. निकट, पास-पास १७. पूरा (लंबा पूरा) १८. खड़ा १९. लेटा हुआ २०. दादा (वयोवृद्ध)

दुस्तर भव सागर समंद तत[21] नांव तिरड्डा[22]
जामण मरण निमंधिया[23] दोऊं जम दंडा
माया काया मंडिया परपंच प्रखंडा
त्रबिध संसार उपाविया कोळाळी भंडा[24]
जाणि लगाई गोड़िये बाड़ी बनखंडा
निरगुण थी सरगुण हुवा क्या जाणै रंडा
निरगुण सरगुण गुण अतीत गुण हंदा गड्डा[25]
जीव करम्मैं बंधिया निरबंध निमंडा
फिरियंदा[26] फुरमाण दा रहिमाण तुसंडा[27]
अलख अदल्ली[28] पातिसाह[29] कुण तुझ हूं वड्डा

(८)

कुण हिंदू कुण मुसळमाण किण ही कुळ हंदा
कुण खित्री कुण ब्राहमण चत्रबेद पढंदा
विणज वसावै वैस कुण कुण सुद्र कहंदा
दुनियांदार फकीर कुण कुंण खूंद[1] मसंदा
उत्तम मद्धिम कुण गुलाम कुण असली जद्दा[2]
कुण बूढा कुण तरुण बाळ कुण पीर रहद्दा
खूब कमाई खांवंदा चंगा[3] कुण मंदा[4]
सोइ भला सुखलीणिया[5] सांई दा बंदा
अलख भंडारा अबट[6] है किस बंट न हंदा
जिन्हां सतगुर भेटिया धन[7] बखत तिनंदा[8]
सांई सेती सुरखरू दिल पाक तिंणदा
जाळंदा पंचै अगनि[9] अजपा जपयंदा[10]

---

२१. उसके २२. तिर सकता है २३. बांध रखे हैं २४. कुम्हार के घड़े के समान २५. गुणों का समूह २६. फिरता है, प्रसारित है २७. तेरे, तेरी २८. दल (सेना) रहित २९ बादशाह

१. स्वामी २. जादा (पुत्र) ३. चंगा, (यहा महंगा तात्पर्य है) अच्छा ४. सस्ता ५. सुकुलीन ६. अविभाज्य ७. धन्य है ८. उनका ९. पंचाग्नि १0. अजपा जाप

अजर जरंदा नाद बिंद बस सूरज चंदा
सुरत निरति संभाळिदा हृदिथी बेहृंदा
राता रहै सबद्द सूं मन सूं झूझंदा[11]
खांडै हंदी धार सिर हुसियार चलंदा
अलह[12] गजा मैदान दी कोई सूर लहृंदा[13]

(२१)

भग्ग न लिंगन पुरख नार अंग न आकारा
मुक्ख न मुंड न प्राण पैर बेहृद्द बिथारा[1]
करण नयण न नासिका बप[2] सुन्नि बिचारा
पिंड न प्राण न बाणि खाणि इन्द्री न उदारा[3]
न्यात न जात न मात तात निरकुळ निरधारा
रत्त न पीत न स्वेत स्याम अबरण ॐ कारा
ना जाडा ना पातळा हळवा अन भारा
नहिं छोटा नहिं मोटड़ा निरगुण निरकारा
नंह भारी हळवा नहीं कंवला[4] न करारा[5]
नां कड़वा न कसायला मीठा नंह खारा
नां तत्ता ना सीयळा[6] ऊंडा उपगारा
नां बाहर नां भीतरै अणभै ततसारा[7]
नां अळघा नां नेयड़ा सच हंदा प्यारा
नां बैठा नांही खड़ा हाजिर हुसियारा
नां भरिया नां सोखणा[8] अक्खै[9] ज भंडारा
नां बाळा नां तरुण ब्रद्ध परण्यां न कंवारा
नां धाया नां भूखिया संसार अधारा
माया छाया पाप पुण्य नहिं जीत्या हारा

---

११. जूझता है १२. रणक्षेत्र का भेद अयवामाप ? १३. सूरवीर पा सकता है

१. विस्तार २. शरीर रहित ३. उदर, पेट ४. कोमल ५. कठोर ६. ठंडा ७. तत्व-सार ८. सूखा ९. अक्षय

आवै जाय न सुक्ख दुक्ख थित्ति न घरबारा
सुन्नि न थूळ न मूळ सखी क्रपण न दातारा
किण देख्या किसकूं मिळ्या कैसा करतारा
रूप न रेख अलेख कै कुछ वार न पारा

(२६)

लाहा लै संसार दा अणलाहा[१] डरणां
आदू राह न छांडिये सांई सूमरणां
हक्क हलाल सबाब है फरमाया करणां
सो भी किया कबूल सांच सांचा पतगरणां[२]
रिजक सदक नित बांटणां तिण थी निसतरणां
फखर दियंतां ही भला मक्कर परिहरणां
दिये दिलावै सो खुदाय पिंड पोखण-भरणा[३]
मरदां खूबी देग तेग जग अज्जर जरणां
देखि बिडाणी[४] जोख सोख दिल मज्झै डरणां
सब कूं मीठा सबद स्वाल मुख थी ऊचरणां
चोरी जारी मुखबरी बद्दी[५] बीसरणां
सत सन्तोख ग्यान मोख नेकी आदरणां
कह्या कुराण पुराण भी बेदे ब्याकरणां
जिन्ह एती पैदास[६] की सो अबरण[७] बरणां
सांई हन्दी सिर रजा चित साहिब चरणां
ओट उसी दी तक्किये उस ही दा सरणां
ध्रू धारण चित राखणा आपा ऊधरणां
दुनियां ऊपर देखिये जम का पासरणा[८]
कुण राजा कुण ही प्रजा कुण बूढा तरणां
जेता जाया जीव है ते आखर मरणां

---

१. हानि २. विश्वास योग्य ३. भरण-पोषण ४. पराई ५. बुराई ६. सृष्टि ७. वर्णनातीत ८. फन्दा

परिशिष्ट—ख

(गाडण केसोदास रा कहिया गीतां री बानगी)

(१)

गीत छोटो साणोर (गजसिंघ जी रो)

छत्रपत 'गजबंध' गांजणौ छत्रपत, विया "मालदे" चमर-बंबाळ ।
मो चीत्रिया न जावै मारू, तू तेवड़ा करै रणताळ ।।१।।
है दळ पै दळ प्रबळ हैड़तो, नीजोड़तौ कितां नर नाह
समरथ कही न सकूं सूरावत, गुण सारा थारा 'गजगाह' ।।२।।
आळस न कूं कहै आतां-बर, "वाघ" कळोधर इळा वरीस ।
कांकळ हक्क वणासूं कमधज, वळ सांभळूं जितै दस-बीस ।।३।।
सरस तणौ पसाव सोधिया, बयण बिना वाखांगण वग ।
"चूंड" हरा आकास चित्रणौ, खेड़ेचा ताहरो खग ।।४।।

(२)

(गीत छोटो साणोर राव अमरसिंघ नागोररो)

गढपति अै घण किया गढ-रोहा, परगह ले जूझिया पह ।
जिम कीधौ 'अमरेस' जड़ाळी, किणिहिं न कीधो अेम कळह ।।१।।
कोटां ओट घणां जुध कीया, फौजां घणा किया पग फेर ।
राउ राठौड़ जिही सूं रौद्रां, अध-पत विढियौ न को अनेर ।।२।।
कोटां प्रांण प्रांण के कटकां, सूं पहरिया दिली पतिसाह ।
अेक कटारी कियौ न अे कण, गजसिंघोत जिसो गजगाह ।।३।।
दांणव बि त्री पगांत्तळ दीधा, बणियै मरण दिखाळियौ बाढ ।
बाही अेकण "गंग" कळोधर, जम-दाढां मांही जमदाढ ।।४।।

(३)

गीत-प्रहास साणोर

असुर बोलियो कुबोल पतसाह मुंह आगळी,
राज बिण खत्री धरम कमण राखै ।
दूसरा "माल" वरदांन तौनूं दिवूं,
"अमर" मौ काढ जम-दाढ आखै ।।१।।
आछटी कमर सूं हाथ चाढी 'अमर'
जोर जम-दाढ में खुधा जागी ।
ऊमरा साहरा साह मुंह आगळी,
लोह छीपाविया गळणं लागी ।।२।।
ऊजळै भुजाडंड चढे "अमरेस" रै
देव बळ लियण वरदांन देवा ।
कठहड़ै कटारी खाय गळौ कीयौ,
लचर कै वधै पतसाह लेवा ।।३।।
झाळ व्रन हुई अँब-खास बिच झळहळे,
मार हेकां बियां हिये मिळती ।
"अमर" ची भगवती खुरम मुंह आगळी,
गळ ग्रजै ऊग्रजै मीर गळती ।।४।।
चरच केसर अगर धूप हूं चन्दणां,
पाट-पत तैं ध्रवी सूधार पूजा ।
"अमर"! जुगां लग नरां नाम रहसी अमर,
दाखियौ कटारी "सूर" दूजा ।।५।।

(४)

गीत वेलियौ-साणोर

अतुळी-बळ "अमर" न सहियौ ओकर,
साहि आलम आगळै सनाढ ।
मुगल कुबोल बोलियो मौड़ौ

जड़ियो तैं बेगौ जम-दाढ ।।१।।
गजसिंघौत कमंध नर गाढिम,
ततखिण माचवियौ रण ताळ ।
दु-वयणं वयण काढियो दुआ-सूं
प्रिसण परां काढी प्रतमाळ ।।२।।
कांनां लगे हेक जो कु-वयण,
कमध भला बांधतौ कड़ि ।
पूंचा लगै भुजा-डंड पेळी,
धाराळी अरि तणै ज धड़ि ।।३।।
असपत राव सनमुख अणियाळी,
"अमर' जु तैं वाही अवसांण ।
कु-वयण कमळ वाय हंस के वी,
अै क्रम नीसरिया आरांण ।।४।।
सूरत छोह निमौ नव-सहसा,
खमियौ कुबोळ न खत्रि गुर।
मरण तणै प्रब भला ज मरिया,
अेकण कटारी बहु ज असुर ।।५।।

(५)
गीत छोटो-सांणोर

सुरतांण हुवौ भै भीत संपेखे, गुड़िया खान सु पड़ियौ गाढ ।
"अमर" तणा भुज हूंता अंबर, जाणै बजर पड़ी जम-दाढ ।।१।।
वाही गजसिंघोत विसरिअै, असुरां फूटा अफर अणी ।
मुगलां तणै पड़ी किर माथै, त्रिजड़ी तड़ित अकाळ तणी ।।२।।
हुय है कंप कांपियौ हजरति, लागुआं परै नीसरी लाग ।
बहमंड "अमर" भुजा-डंड वहती, वाढाळी झळहळी व्रजाग ।।३।।
असपति राव चमकि औद्रकियो, खेड़ेचै वाही कर खीज ।
सुकरि अकास हुंत सेलारां, वीजुळ विढण क वुही वीज ।।४।।
जवनां सूं अमरेस जूटवा, कट्टारी दामणी करंग ।
खांना घणा तणौ खण खांनौ, श्रोण रंगी झबकी सारंग ।।५।।

(६)
गीत छोटो-साणोर (बलू गोपालदासोत चांपावत)

धड़ लाकड़ हुवै बळै हंस धूंआं, झाळ हुवौ रणताळ झलू ।
बळगौ खाग अभाग बैरियां, बळती आग बज्राग "बलू" ।।१।।
ऊपर सत्रां पड़तां ईंधण, घ्रत रत दरड़ै पूर घणौ ।
पौरस झाळ काळ पंडवेसां, तगस भटकियौ "पाल" तणौ ।।२।।
मेछां घड़ा अभनमों "मांडण", सांफळगो पुळगो सबळ ।
बटका हुय कटका बाणासां, झटकां भटकै धोम झळ ।।३।।
हाथां मछर केवांण हूविया, सुरताणां माथै यर सूळ ।
असुरां थाट काट आवटियौ, मंगळ झळ ठरियो कळ-मूळ ।।४।।

(७)
गीत बडो-साणोर

अमर राव वाळै दिवसि दाव जाणै अभंग,
सूरवर साथि लीधां समेळा ।
पटै जो हूंतौ "बलू" पतसाहरै,
"बळू" भेळौ हुवो मरण बेला ।।१।।
तण "गजण" साथि भाराथ चित तेवड़ै,
त्यार भड़ मुहरि आगळी खत्री ताइ ।
असुर रौ वित खावतो खत्री अंत रे
अंत रै तंत सुज मेळियो आइ ।।२।।
जोधपुर सुपह री चाड मांडे जुड़ण.
आपरा लियां परिग्रह उजासै ।
"पाल" रौ खूंद वरतणि जुदी पांमतौ,
पूजियौ विघन ची वार पासै ।।३।।
मारियो सुणै पतिसाह राव अमर सी,
साह सूं मांनि जुध भवां सारू ।
मरण दिन पटौ परहरि नवौ मोड बांधि,
मुऔ जूना पटा साथि मारू ।।४।।

(८)
गीत प्रहास-साणोर

विजड़ ऊठियौ धूण गिर मेर रो बहादुर,
पछै म्हे कदे अवसाण पावां ।
"अमर" नै सुरग दिस मेल नै अेकलो,
आगरै लड़ेबा कदे आवां ।।१।।
अम्हें तो "अमर" राजा तणा ऊमरा,
जुड़ेबा पार की छठी जागां ।
बोलियो 'बलू' पतसाह रै बराबर,
मारवै-राव रो बैर मांगां ।।२।।
केसर्‌यां मांह गरकाब वागा करे,
सेहरो बांध हलकार साथै ।
"अमर" रो भतीजो तौल खग आखवै,
"बलू" अर अग्गरां हुवा बाथै ।।३।।
पटा नै नाखि भिड़ साह सूं चटापड़
कांम नव-कोट सांचो कमायो ।
वाद कर साह सूं वैर न्रप वोढियो,
"अमर" नै मुहर करि सरग आयो ।।४।।

(९)
गीत बेलियो-साणोर (जोगीदास भाटी)

गजदंतां परै फूटै गजकेसरि, गज चै कमळ पडंतै गाढ ।
जादव मांहि थकै जंम दाढां, "जोगै" आ बाही जमदाढ ।।१।।
गोइन्द-उत दाखवै गाढिम, दंत दूवा सूं थकै दळ ।
काळ तणै वसि थिये कटारी, काळ तणै वाही कमळ ।।२।।
भांगै डील भलो राय भाटी, कुंजर धकै भयंकर काळ ।
आयैं मुख रांणा मुख अंतर, मुख जम तणै जड़ी प्रतमाळ ।।३।।
आधंतर काढै अणियाळी, कूंभाथळ वाही कर क्रोध ।
अंतक सूं "जोगै" जिम आगै, जुध करि मुवौ नहीं कोइ जोध ।।४।।

(१०)
गीत हरदास महेस दासोत रो

अगै आद प्रथमाद कासप हुतां ऊपनी,
आप मुख ब्रह्मंड वेद उकता ।
नव खंडां हालिया मेर हूंतां नदी,
हालिया जंग हरदास हूंतां ।।१।।
ईस हूं जोग, चवदह रतन उदध हूं,
जगत आदीत हूं दिवस जूवा ।
पोहप पन रै तथा सोम हूं प्रगट जै,
हदा हूं सदा संगराम हूवा ।।२।।
राजगत इन्द्र हूं अन्त जमराज हूं,
सीत हेमंत हूं वन ग्रहण सूळ ।
वडा आरंभ दुजराम हूं वाधिया,
मथण मधकर तणो महा कळ मूळ ।।३।।
मुगत वो प्रगटियो बोध गोरख महा,
बड बड़ा सगत सूं जोध बीया ।
करम बस मह मंडळ बाण भ्रगुपत किया,
करम सीह रै भाराथ कीया ।।४।।
कियो बैराट चौ घाट करणा करण,
मांड माथै वडां वडम चै मौड़ ।
हेक बळ केळ वण जोध बदि वाहदै,
रांम भांजण घड़ण कीध राठौड़ ।।५।।

(११)
गीत (राठौड़ हरराज महेसदासोत रो)

पत साह वदै दैसोत पतगरै, प्रथम कळू नंह लागो पास ।
जसरा सेहर जटा संकर जिम, दिन दिन प्रसन्न चढै हरदास ।।१।।
जीवो जिको इण ज्यूं ही जीवो जीवियां ज्याह सजीवण जाण ।
सिधरा भ्रगुट ज्यूंही नव सहसां पळी भलां चढिया परमाण ।।२।।

मेलै पटा घणूं सनमानै, धिन जीतब बंस देस धर ।
हर जिम पळी तुहाळी हदमल, हर कर वंदै राय हर ।।३।।
धवळा सहज धवळ व्रत धारण, मह सतवादी धवळ मन ।
धवळा ले रतो ज्युंही धवळा, धवळ कहावै सू ज धिन ।।४।।
सुतण महेस वेस धर साहण, सिंघ चाढे कमधजां सम ।
पूजै वेस नरेस देस पत, जस राकेस महेस जिम ।।५।।

(१२)
गीत (वीठळ दास जी रो)

वर जागी खड़ग वासानर वीठळ, आरण रिणां मंडियै उपाव ।
वारो मोहणां दास न वयर, तैं मारियो अनै सताब ।।१।।
पड़ियाळगां मुहै तप पावक, सक हाथोटी विढणां सु कख ।
कीधो भूक भलौ रामाधज, राव दहियो रस तणी रुख ।।२।।
दुजड़ दहण जै सींग दूसरै, मूळी छळबळ सुध मणे ।
सात्रब भूक किया हामू सुत, तखणा में गोपाल तणे ।।३।।
धजवड़ धमा धरै धू धारण, सिध साधक राँठौड़ समाथ ।
सिव वीरद बूंदी चो सामंत, भसमा भूक कियो भाराथ ।।४।।
मांडण हरै रसा इण मांझी, खड़ग ज खाधो खांडेराव ।
म्रग नैणी अर-घड़ माणेवा, चढियो सुरत तणैं चाढाव ।।५।।

(१३)
गीत रावळ तेजसी महवेचै नूं केसवदास गाडण कहै
(श्री सौभाग्य सिंह सेखावत रा सौजन्य सूं)

मिणियड[१] गढ गुफा जरद[२] मैं मेखळ,
खेड़चै खत्र जोग खरै ।
रूपक बंध तेजसी रावळ,
कमधज जुग आदेस करै ।।१।।

---

१. मालाणी (महेवा) २. कवच

मंत्र अस्टंग दिढा तन मुद्रा,
दसूं दवार वसू दस देस ।
कमंध जमात मिळी अै कटकां,
जोध आदेस करै जोगेस ।।२।।
असमर[3] डंड कोवंड आधोरी,[4]
पहु मेधा दळ लियण परसाद ।
दीवै नित हूं साधक दूदावत,
नद नींसाण त्रिसींगी नाद ।।३।।
जत सूरत कौपीनि सजंगम,
म्रग गज धजबंधी कुळ मौड़ ।
सबळ तखत म्रिधांण[5] तणैं सिर,
राज करै गोरख राठौड़ ।।४।।

---

३. तलवार ४. हाथ रखने के लिए बनाया हुआ लकड़ी का आधार जिसे साधू रखते हैं । ५. महेवा नगर

परिशिष्ट—ग

("गजगुण रूपक-बन्ध" में फौजां री रवानगी तयारी तथा जुध रो वर्णन)

दळ रो कूच (छन्द चन्द्रायण)

चोटां घोर निहाय, नगारा वज्जिया ।
भेर वुरंग निनद्द, क अंबर गज्जिया ।।
सद्द हुआ सहनाइ, समंद उझल्लिया ।
राजा 'गाजीसाह' दिली दिस चल्लिया ।।१।।
ढैंचाळां सिर ढल्ल, ढळक्कै दूहरी ।
खेहा मज्झि दुडिंद, क चंद सरव्वरी ।।
ऊपड़ियां असमान क, को रण तेवड़ा ।
वांक मुहां वर हास, महाभड़ वंकड़ा ।।२।।
सीरम सेढां सट्ट, तुरंगम तप्पड़ै ।
पाहाड़ां पड़-सद्द, निसांण गड़ग्गड़ै ।।
साहण थट्ट सुभट्ट, असंख अपार है ।
चौमासै किरि जाण, चले घण बारहै ।।३।।
हिल्लै हेम पहाड़, क है थट हल्लिया ।
फट्टौ जाण अकास, क साइर छिल्लिया ।।
हुई हमस्स धमस्स, पंयाळ दहल्लिया ।
कमधज्जे केकाण, दिली दिस ढल्लिया ।।४।।

(छंद झापताळी)

ऊबटां विक्कटां औघटां ऊपरा ।
दौड़तां है-थटां, राह हूआ दरा ।।
ऊछळै फीण है सास वाजै उरै ।
ताडि कोमंड में फाड़िकीया तुरै ।।१।।
चाबकै झालिया चंचळा चप्पळा ।
नांम "जै" अंग ऊतंग वाहै नळा ।।

खेड़रा जोध तुरंगाण ताता खड़ै ।
पैखुरै वीखणी खोण खानां पड़ैं ।।
तप्पिया तालुए लौह घोडांतणै ।
आड झांफां भरै तेज सूं ऊफणै ।।
ऊजळा दांत गय सांमळा आगळी ।
सूंड उल्लाळता हींडळै सीगळी ।।
मंद मंदोमता व्रक्ख धक्का मुड़ै ।
गाजता मेघ पाहाड़ काळा गुड़ैं ।।
आंकुसां गज्ज कूंभाथळां ऊजळी ।
वादळी सीस जाणै खिमै वीजळी ।।
लाइयां लंगरां पेखि पट्टाझरां ।
डील भौळौ पड़ै कुंजरां डूंगरां ।।
गज्ज ऊधोळिया रज्ज सूं गूडळा ।
धोम मै पब्ब दीपै किरे धूंधळा ।।

• •. •

साही दळ रौ वरणण

कवित्त

भीम भयंकर नाद, भेर नीसाणां गरजै ।
गुहरि सद्द गड़गड़ै, गयण बारह घण गज्जै ।।
खिमै कूंत अदभूत, भड़ां वांकां भूडंडै ।
वादक वादळ वळकि, वीज लत्ता व्रहमंडै ।।
तळ जोड़ पटै कुंजर वहै, अनड़ नदी नड़ दड़िअड़े ।
असपती राव असमान रा, दळ वद्दळ वदि वदि चड़े ।।१।।
भूमंडळ भैकंपे, जाण रैणाइऊ फट्टौ ।
प्रळै-काळ कळिपंत, प्रथी उतपात प्रगट्टौ ।।
रांम चंद सिरि लंक, कीध जांणै आरंभह ।
जटा-जूट किरि धूणि, रुद्र किय नाटारंभह ।।
वन खंड, दुरग्गां गिरवरां, आवरत्त बूहौ सबळ ।
सुरतांण खुरम ऊपर खड़ै, दिस प्राची पतिसाह दुळ ।।२।।

अस्त्र शस्त्रां रो वरणण (छंद पद्धड़ी)

हथनाळ हवाई हूकळंत ।
गजनाळां गोळा गड़िअड़ंत ।।
बळती ब्रजागि उड्डै बहंत ।
आराबौ छूटौ आवरंत ।।
गोळा वहत्त धूजत्त गोम ।
धुब्बियौ गगण धड़हड़ै धोम ।।
आतस्स घोर मिळियै अंधार ।
रिण सोर जोर हुय रुद्रकार ।।
कुदरत्त विछूटा कुहक बांण ।
आकंप इळा पुड़ आसमांण ।।
गोळियां ताड़ विपरीत गत्त ।
ओ अड़ै गड़ै किरि मेह अत्त ।।

जुध वरणण

झूझारां आवध झळहळेय ।
ब्रहमंड क वीजां बळवळेय ।।
सैफळो वाजियौ सामतांह ।
मेलियौ लोह मुंह रावतांह ।।
भारत्थ हाक वाजी भड़ांह ।
घैघूंबि थाट लूंबै घड़ांह ।।
निहसिया जोध घाए नित्रीठ ।
रिम खळै रूक वाजियौ रीठ ।।
उड्डियौ बूर धारां अंगार ।
खळखट्ट निहट्टा खूंदकार ।।
हुब्बिया कटक बाप्परि हीक ।
झूझार झट्टकै हुवै झीक ।।
संघार मार लैकार सेन ।
मिळ सार धार अंधार मेन ।।

धड़ मुंड खंड वे-रुंड धक्क ।
करमाळ वहै किरि काळ चक्क ।।
सामठी धाक पड़ साबळांह ।
वळवळै धार बीजूजळांह ।।
गज वाज गडौ-थळ भड़ गुडंत ।
निरलंग अंग धड़ नीजुडंत ।।

• • •

खळहळै रत्त परनाळ खाळ ।
डोळियां पड़ै धड़ जूह डाळ ।।
करड़कै कंध संधांण घट्ट ।
फरड़कै फीफकारां आळ फट्ट ।।
झट्टकै झेर फाटै झराड़ ।
झीको पंड़त आसुरां झाड़ ।।
मरगड़ां जूह मुरड़ंत माड ।
चूनौ हुइत्त चौसट्टि हाड ।।
उड्डै कपाळ खग औझड़ांह ।
दीझंति जाण दौटा दड़ांह ।।
हम्मलां ढहै ढालां हसत्ति ।
धूबकै दांत बाजै धरत्ति ।।
है तूट तुंड रुळि रुंड मुंड ।
भाजै भ्रसुंड गै हाड गुंड ।।
वीछड़ै संघ अनमंघ वप्प ।
झूंझार दियै तेगां झडप्प ।।
वेसूल फूल धारां विहार ।
भाले पड़ंत डोले भंभार ।।
संग्राम लोह वाहै सनड्ड ।
विपरीत घाउ ऊखळा वड्ड ।।
तड़छिया जांहि गोडिया तांण ।
जम दढां टेउ ऊठै जुवांण ।।
लागै भड़ लोहै लोह छाक ।

घूमंति जाण पीऐ ऐराक ।।
ऊजड़ै कड़ा जिरहां अलग्ग ।
खडखड़ै जोध वाहै खडग्ग ।।
खसरक्क पटै खांडै खड़ाक ।
नीजुड़ै नरां सिरि रहै नाक ।।
त्रिज्जड़ां त्रिजड़ वाजै नत्रीठ ।
डांडेहड़ गेहिर जांण दीढ ।।
उड्डै तिमच्छ खागां अघात ।
आकास जाण उल्लका पात ।।
जाजरां सिरां कौपरां जोर ।
घरहरां तुरां पाखरां घोर ।।
गिरवरां धरां अंबरां गाज ।
वज्जरां छरां निडुरां वाज ।।
पंजरां उरां खंजरां पेल ।
सूंसरां फरां बगतरां सेल ।।
हींजरां खरां हंखरां होड ।
लोहरां भरां लल्लरां लोड ।।
सिंधुरां गरां साथरां सूर ।
पै करां थरां संघरां पूर ।।
लौहड़ां लड़ां लड़थड़ां लोट ।
बैहड़ां धड़ां मरगड़ां बोट ।।
उझड़ां भड़ां नीझड़ा अंग ।
वीजड़ां गड़ां वीछळां वंग ।।
जंमजड़ां घड़ां समवड़ां जंग ।
त्रिज्जड़ां झड़ां तड़फड़ां तंग ।।
अन्नड़ां नड़ां अप्पड़ां अंत ।
फड़फड़ां जीव जांणै फुरंत ।।
छक्कड़ां कड़ां खड़खड़ां छूट ।
तूंवड़ां जिहीं सिर पड़ै तूट ।।

• • •

कवित्त

वीर रस्स वाधियौ, वीरं लागा व्रह्मंडै ।
रांमायण भारत्थ, कना देवायण मंडै ।।
एरापत्त गजिंद्र, फौज गै जूह गडाड़ां ।
तिकरि मेर परबत्त, मज्झि कुळ आठ पहाड़ां ।।
बंदूक मार गोळा सरै, लागै पार न लोहड़ै ।
रिण खेत खुरम सुरतांण रौ, जटा-जूट कुंजर पडै ।।१।।
प्रळैकाळ रणताळ, वडौ इक आव्रत वूहौ ।
सीसोदां सैफळां, सरिस राठौड़ां हूऔ ।।
गोवर्धन रट्ठवड़, पड़ै पिंड लोहैं पूरै ।
कियै कूंत सावरत, दळां चतुरंगां चूरै ।।
कीधौ विसेख करतै कळह, तरसि तूंग 'चांदै' तणैं ।
वणियोक चंद संकर वदन, सुजड़ घाड़ मुहि सामणै ।।२।।
सुसंग्राम गजसिंघ, सीस गयणंगण लग्गै ।
वीज जिहीं वळकतै, खाग ग्रहियै ऊनग्गै ।।
जेंम 'खेम' 'जैतसी', जोध विद्या खेलंतौ ।
गजथट्टां गाहतौ, साह फौजां फुरळंतौ ।।
वरियाम जणै जण. वाजतौ, जोधपुरां जोधह पुरौ ।
वजरंग हुऔ हणवंत वरि, भलौ 'भीम' कल्याण रौ ।।३।।

• • •

जै मथिया के महण, मेर कळि मत्थण माझी ।
हेट हेट अविणास, तेग प्रथमी पुड़ प्राझी ।।
तात वैरि ततकाळ, लियौ जिण चालुक लो हैं ।
जिम 'मोहण' मारियौ, बिजड़ बूंदी घड़ डौहै ।।
भांण रै भीच बळभद्र रौ, ऊथाळै साबळ अणीं ।
नरपाल प्रथीमल पाड़ियौ, दांणव सिंघ दरस्सणीं ।।

• • •

वपि विहंड पळ खंड, तेग तिमछांमुहि तूटौ ।
धारां मुहि धड़छियौ, कुंभ किरि काळी फूटौ ।।

हाड, हाड संधाण, हुआ जूजुआ जड़ाळै ।
ढळतौ धड़ ऊपरा, सीस संकर उद्दाळै ।।
तिण स्त्रोण वदन कीयौ तिलक, सुकरा स्त्रोण बंबाळियौ ।
खूमांण तणै रिण मांणसर, अछरि हंस वर भाळियौ ।।
मान सिंघ सीसोद, भिड़ै रहियौ भांणावत ।
गोकळ जीवतसंभ, विढै हूऔ वड रावत ।।
सीसोदो 'कल्याण', रहै रावत निभ्भैयण ।
हरीदास रट्ठवड़, रहै 'कचरो' रिण डोहण ।।
हरिसिंघ हेक भाटी रहै, दुल्लह सुरतांणी घड़ा ।
'भीमेण' रहंतै 'अमर' रै, रहिया रावत अेतड़ा ।।
भागो खान पहाड़. छाड छळबळ बूंदेलौ ।
भागो दरियाखान राड़ मूके रोहिल्लौ ।।
गौ भज्जे 'अबदूल', रिदै नारायण हाडौ ।
गौ 'सादूळ' पमार, धणी गायड़ रौ गाडौ ।।
खोजो 'गयार' साबर गयौ, खग संपेखे ऊनगा ।
सुरतांण खुरम जुधभाजतै, कायर अेता भाजगा ।।
खाळ रत्त खळहळै, जांण वरसाळ नदी जळ ।
गज तुरंग गुड्डिया, गुड़ै भड़ हूवा गूंछळ ।।
रुंड मुंड रोळियौ, "भीम" पाड़ियौ भुजाळौ ।
भारथ कुर-खेत रै, हुऔ जुध लंका वाळौ ।।
गजसिंघ गिरंदां कमधजां, माहि मेर माझी खड़ौ ।
पतसाह दुहूं गजगाह प्रव, हुइ नीमड़ियौ हेकड़ौ ।।
घाइ घाण ऊतरै, खांन सुरताण निघट्टा ।
राव राण हुइ रहच, मीर उमराव अहट्टा ।।
खुरम गयौ नीसरै, "भीम" अमरावत साटै ।
के सूरा लड़िमुआं, लूण किरिमिळियौ आटै ।।
वीर हर तिलक वावाड़िया, साइदाण वज्जै कटक ।
गजसिंघ कियौ भिड़ गजदळां, रिण सँग्रांम राहाचरक ।।
नवै कोड़ि कतियाण, छपन कोड़ी चौमंडा ।
चौसट्ठी जोगणी, बीस जै रै भुज डंडा ।।

रगत पिद्ध बळि लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती ।
कियौ संकर सिंगार, रुंडमाळा गळ घत्ती ।।
कौतिग्ग दीठ भासंकरह, वरे वडा वर अच्छरां ।
रट्ठौड़ दीध रण चाचरहि, धूहड़ धवड़ पळच्चरां ।।
जरख रींछ वड्डाख, सिवा सतलस्स मलक्का ।
साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का ।।
भूत प्रेत पेसाच, वहत चेड़ा बह वैतर ।
वीर सिद्ध वैताळ, निसाचर भूचर खेचर ।।
राठौड़ ज तै कीयौ रिणह, गहम भुजाई भटकळह ।
पळ धाप कियौ पळहारियां, कळळ बिंद कोळाहळह ।।
अेक गया भगवाट, सांमि छळ मेल्है कळछळ ।
हेक मुगति साजोत, गया भेदे रवि मंडळ ।।
अरस हुंत ऊतरे, अेक वर अच्छर वरिया ।
अेक पड़ै लौहड़ै, लोह छक्का लालुरिया ।।
प्रथीराज "भीम" गोकळ प्रचंड, अभंग पाड़ ऊपाड़िया ।
जुध कमंध जोध-विद्या नमौ, जोध मार जीवाड़िया ।।
रांमायण रामचंद, वहै कूंभक्रन रांमण ।
हणमंत खौड़ो हुवो, मरे-जीवियौ लखम्मण ।।
अरजण भारथ कियौ, लियण हथणापर दूकौ ।
जै दसरथ अहिवन्न, करन मारियौ घडूकौ ।।
गजसिंघ कियौ गजगाहणौ, "भीम", मारि भागो खुरम ।
कमधज्ज पखै जीतौ कमण, साजै नाद संग्राम इम ।।
जिसौ पत्थ भारत्थ, रांम जीतौ रांमायण ।
जिसौ लखण इनद्रजीत, भीम भग्गै दुज्जोअण ।।
जिसौ जोध बळि भद्र, पळंब दाणव संहारियै ।
जिसौ वीर नरसिंघ, हरिण कास्सिप वै हरि यै ।।
साझियै तिपुर संकर जिसौ, वांमण चम्पि पयाळ बळि ।
गजसिंघ भीम गोड़व्वियौ, तिसौ दीठ रवि चक्र तळि ।।
पड़े ढाल दिस अेक, पड़े अेक दिस पक्खर ।
पीलवांण इक दिसा, पड़े परचंड बहादर ।।

हाड गूड कप्पाळ, सेत दांतूसळ सब्बळ ।
चरम मांस झड़ि पड़ै, जांण धमळागिरि ऊजळ ।।
गजसिंघ गैमरां गोड़िया. तीह् कलेवर पंजरां ।
सावज्ज सीह् व्याया सघण, रहि भोळै गिरि कंदरां ।।
सोळह् सै संमंत, हुऔ जोगणि-पुर चाळै ।
सम्मै अेकासियै, मास कातीक वडाळै ।।
पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी ।
वीर खेत पूरब्ब, रित्त हेमंत प्रघट्टी ।।
सुरतांण खुरम भागो भिड़े, चाडि चकथ्थां चक्कवै ।
गजसिंघ प्रवाड़ौ खट्टियौ, वहै भीम चित्तौड़वै ।।

परिशिष्ट—घ

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

१. विवेक वार नीसाणी - सम्पादक श्री मूळचंद 'प्राणेश' प्रकाशक-राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ (राजस्थान)।

२. केशवदास नामक दो चारण कवि -श्री सौभाग्य सिंह शेखावत (वरदा वर्ष ८ अंक ३ जुलाई १९६८)।

३. राजस्थानी वीर गीत संग्रह - संपादक - श्री सौभाग्य सिंह शेखावत प्रकाशक-प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर।

४. हिस्ट्री ऑफ राजस्थानी लिट्रेचर - डा. हीरालाल महैश्वरी।

५. "गज गुण रूपक-बन्ध" - संपादक पद्मश्री सीताराम लाळस। प्रकाशक-प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर।

६. राजकीय अभिलेखागार, बीकानेर के हस्तलिखित संग्रह।

७. जोधपुर रा परगना री ख्यात (राजकीय अभिलेखागार बीकानेर)।

८. अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर के हस्तलिखित संग्रह ।
९. चूरूमंडल का शोधपूर्ण इतिहास - श्री गोविन्द अग्रवाल ।
१०. चारण साहित्य का इतिहास -डां. मोहन लाल जिज्ञासु ।

Indian Ins
115860
11/11/2004
SHIMLA

गाडण केसोदास सत्रहवीं शताब्दी रा उण थोड़ा सा दीपता नछत्रां मांय सूं अेक है। जां रा परकास हूं डिङ्गळ साहित आज भी जगमगावै। अध्यात्म ग्यांन अर तत्त दरसण री काव्यमयी नीसांणियां रा समवेत नाद सूं बाजता नीसांण रै लारै ई वीर-रस रा उदात्त काव्य-सृष्टा रा रूप में आप री निरवाळी पिछांण राखणियां इण गाडण कवि रो थान राजस्थानी साहित रा इतिहास में गाडण सिवदास नै गाडण पसाइत सूं भी क्यूं खांगो ई पड़ै। मध्य जुगरा मूर्धन्य कवियां-रा मौड़ नाथ सम्प्रदाय रा सिद्ध कवि अलूनाथ अर गाडण केसोदास जोग तथा तत्त-दरसण नै भगती भाव री समन्वित दीठ देवणियां सन्त तो हुता ही पण इण सूं भी मोटो उपगार वां री हिन्दू-मुस्लिम अेकता री अर राम-रहीम नैं ईस्वर-अल्ला नै अेक मानण री अमर भावना में निहित है जिण सूं भारतीय जन-जीवन में भाई-चारा नै सद्भाव रो आलोक फैलियो।

Library IIAS, Shimla
RJ 817.51 G 116 G
00115860

पन्द्रह रिपिया